



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 188]

No. 188]

नई दिल्ली, शुक्रवार, जुलाई 13, 2007/आषाढ़ 22, 1929
NEW DELHI, FRIDAY, JULY 13, 2007/ASADHA 22, 1929

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 13 जुलाई, 2007

अंतिम जांच परिणाम

(मध्यावधि समीक्षा)

विषय : सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका और यूरोपीय संघ के मूल के अथवा वहां से निर्यातित फेनोल के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच (मध्यावधि समीक्षा)।

सं. 15/4/2006-डीजीएडी.—1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए ;

पृष्ठभूमि

2. यतः उपर्युक्त नियमावली को ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात् प्राधिकारी भी कहा गया है) ने दिनांक 13.02.2003 को अधिसूचना सं. 14/4/2002- डीजीएडी के तहत अंतिम जांच परिणाम अधिसूचित किए थे जिनमें सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका और यूरोपीय संघ के मूल के अथवा वहां से निर्यातित फेनोल के सभी आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की थी। मूल जांच में निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा दिनांक 24.06.2002 की अधिसूचना सं. 14/4/2002- डीजीएडी के तहत प्रारंभिक जांच परिणाम अधिसूचित किए गए थे। प्राधिकारी के अंतिम जांच चपरिणाम दिनांक 13.02.2003 की अधिसूचना सं. 14/4/2002- डीजीएडी के तहत निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा अधिसूचित किए गए थे और संबद्ध वस्तुओं पर अंतिम शुल्क सीमाशुल्क अधिसूचना सं. 47/2003- सीमाशुल्क दिनांक 24.03.2003 के तहत लगाया गया था।

3. उक्त अधिनियम की धारा 9क(5) के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी को मै. हिन्दुस्तान आर्गेनिक कैमिकल्स लि. और मै. एसआई ग्रुप इंडिया लि., मुंबई से एक दस्तावेज युक्त आवेदन प्राप्त हुआ था जिसमें

समीक्षा और संबद्ध वस्तुओं पर लागू पाटनरोधी शुल्क को इस आधार पर अगले पांच वर्षों के लिए जारी रखने का अनुरोध किया गया था कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बावजूद पाटन जारी था और संबद्ध देशों द्वारा पाटन के कारण घरेलू उद्योग की क्षति उठानी पड़ रही थी। यह भी दावा किया गया था कि पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को आवश्यक राहत पहुंचाने के लिए अपर्याप्त था और पाटनरोधी शुल्क की समाप्ति से घरेलू उद्योग को हुई क्षति में और वृद्धि होगी। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इस बात की जांच करने के लिए कि क्या पाटनरोधी शुल्क की समाप्ति से पाटन, क्षति या ये दोनों जारी रहेंगे या इनकी पुनरावृत्ति होगी, दिनांक 14.07.2006 को एक सार्वजनिक सूचना सं. 15/4/2006- डीजीएडी जारी की थी। भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित हुई थी तथा जिसके तहत पाटनरोधी जांच (मध्यावधि समीक्षा) की शुरुआत की गई थी।

ख. सामान्य प्रकटन

4. जांच के संबंध में नीचे वर्णित प्रक्रिया अपनाई गई है :

- (i) उपर्युक्त नियमावली के अंतर्गत निर्दिष्ट प्राधिकारी को मै. हिन्दुस्तान आर्गेनिक कैमिकल्स लि. और एसआई ग्रुप (जिसे पूर्व सेनेकरेडी हरदीलिया लि. के नाम से जाना जाता था) प्रस्तुत एक आवेदन प्राप्त हुआ है, जिसमें सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका और यूरोपीय संघ (जिन्हें एतदपश्चात संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित फेनोल (जिसे एतदपश्चात फेनोल या संबद्ध वस्तु कहा गया है) के आयातों से संबंधित लागू पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा एवं उसे बढ़ाने के लिए मध्यावधि समीक्षा जांच की शुरुआत करने का अनुरोध किया गया है।
- (ii) आवेदक द्वारा प्रस्तुत सूचना में मध्यावधि समीक्षा जांच की शुरुआत को न्यायोचित ठहराने हेतु पर्याप्त प्रथम दृष्टया साक्ष्य दर्शाए गए हैं। इनसे संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने भारत के राजपत्र असाधारण में प्रकाशित दिनांक 14 जुलाई, 2006 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसके तहत सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका और यूरोपीय संघ के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयात से संबंधित पाटनरोधी मध्यावधि समीक्षा जांच की शुरुआत की गई थी।
- (iii) प्राधिकारी ने संबद्ध देशों में निम्नलिखित ज्ञात उत्पादकों और/या निर्यातकों को सार्वजनिक सूचना की एक-एक प्रति भेजी थी।

- हंगेरोम- यूरोप- 2000 कंपनी, हंगरी
- एएच मार्क्स एंड कंपनी लि., इंग्लैंड
- फेनोलकेमी जीएमबीएच, जर्मनी
- एनीकैम, इटली
- मित्सुई एंड कंपनी लि., सिंगापुर
- मेरिसोल, दक्षिण अफ्रीका

और उन्हें संगत सूचना प्रदान करने अथवा नियम 6(2) के अनुसार इस पत्र की तारीख से चालीस दिनों या बढ़ाए गए समय के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने का अवसर प्रदान किया।

- (iv) संबद्ध देशों के नई दिल्ली स्थित दूतावासों को नियम 6(2) के अनुसार जांच की शुरुआत के बारे में सूचित किया गया था और उनसे उनके अपने देशों में निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समयावधि के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने की सलाह देने का अनुरोध किया गया था।
- (v) प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध वस्तु के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों, उपभोक्ताओं, औद्योगिक प्रयोक्ताओं को जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की एक प्रति भेजी थी।

- सीजे शाह एंड कंपनी, मुंबई
- हरेश कुमार एंड कंपनी, मुंबई
- पीसीएल इंडस्ट्रीज, नई दिल्ली
- कांतिलाल मनीलाल एंड कंपनी, मुंबई
- सोनकमल एंटरप्राइजेज, मुंबई
- खेतान ब्रदर्स, मुंबई
- शुभम डाइज एंड कैमिकल्स लि०, दिल्ली
- एक्रोन एंटरप्राइजेज, अहमदाबाद
- नाइकनवारे कैमिकल्स लि०, मुंबई
- पारस डाइज एंड कैमिकल्स, नई दिल्ली
- टोरेट फार्मास्यूटिकल्स लि०, गुजरात
- युनाइटेड फासफोरस लि०, मुंबई
- रेजिन्स एंड प्लास्टिक लि०, मुंबई
- कैलाश पॉलिमर्स, नई दिल्ली
- सेंट्रम मेटलिक्स प्रा० लि०, मुंबई
- वंडर लेमिनेट्स प्रा० लि०, पश्चिम बंगाल
- मेघदेव एंटरप्राइजेज, अहमदाबाद
- सतगुर इंटरनेशनल, नई दिल्ली
- हाईपॉलिमर लैब्स लि०, नई दिल्ली
- रेनबो कलर्स एंड कैमिकल्स, गुजरात
- ब्लीच मार्केटिंग प्रा० लि०, गुजरात

- कारमेन इंटरनेशनल (प्रा०) लि० तमिलनाडु
- कृष्णा एंटीआक्सीडेंट्स प्रा० लि० मुंबई
- एनजीपी इंडस्ट्रीज लि०, नई दिल्ली
- फार्मसन फार्मास्युटिकल गुजरात लि०, बडौदा
- इंडिया ग्लाइकोल्स लि० नई दिल्ली
- सिंह प्लास्टिसाइजर्स एंड रेजिन्स (इ०) प्रा० लि०, नई दिल्ली
- नेशनल प्लाइवुड इंडस्ट्रीज लि० पश्चिम बंगाल

और उन्हें निर्धारित ढंग एवं तरीके से संगत सूचना प्रदान करने और नियम 6(2) के अनुसार इस पत्र को जारी किए जाने की तारीख से चालीस दिनों के भीतर लिखित में अपने विचारों से अवगत कराने की सलाह दी थी।

- (vi) केंद्राय उत्पाद शुल्क एवं सीमाशुल्क बोर्ड (सीबीईसी) और वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआई एंड एस), कोलकाता से जांच अवधि और इससे पहले के तीन वर्षों के लिए भारत में संबद्ध वस्तु के आयातों के ब्यौरों का बंदोबस्त करने का अनुरोध किया गया था। तथापि सीबीईसी द्वारा कोई सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई थी।
- (vii) प्राधिकारी ने नियम 6(3) के अनुसार संबद्ध देशों के ज्ञात उत्पादकों और/ या निर्यातकों और दूतावासों को आवेदन के अगोपनीय अंश की प्रतियां उपलब्ध कराई थी। अन्य हितबद्ध पक्षों के लिए भी, अनुरोध करने पर अगोपनीय आवेदन की एक प्रति उपलब्ध कराई गई थी।
- (viii) निम्नलिखित उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों ने निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष अपने अनुरोध/उत्तर/सूचना प्रस्तुत की है :-
- (क) मेरिसोल आरएसए (प्रा०) लि०, दक्षिण अफ्रीका
 - (ख) मित्सुई फेनोल्स सिंगापुर पीटीई लि० (एमपीएस), सिंगापुर
 - (ग) मित्सुई एंड कंपनी लि० (एमबीके), सिंगापुर का निर्यातक जो मित्सुई फेनोल सिंगापुर पीटीसी लि० (एमपीएस) जो सिंगापुर का उत्पादक है द्वारा उत्पादित फेनोल का निर्यात करता है;
 - (घ) क्रेसेंट कैमसोल प्रा० लि०, मुंबई
- (ix) मै० श्रीराम इंडस्ट्रीज लि० ने जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की प्रति ली थी लेकिन इसके बाद कोई उत्तर नहीं दिया था।

- (x) जिन निर्यातकों/आयातकों ने सूचना उपलब्ध नहीं कराई उन्हें असहयोगी निर्यातक/आयातक माना गया है।
- (xi) जांच 1 जुलाई 2005 से 31 मार्च 2006 तक की अवधि (पीओआई) के लिए की गई थी। तथापि क्षति संबंधी जांच 2002-03, 2003, 04, 2004-05, 2005-06 और जांच अवधि के लिए की गई थी।
- (xii) प्राधिकारी ने नियम 6(6) के अनुसार मौखिक रूप से संगत सूचना प्रस्तुत करने के लिए हितबद्ध पक्षकारों को अवसर प्रदान करने हेतु दिनांक 16 जनवरी 2007 को एक मौखिक सुनवाई आयोजित की थी जिसमें मै0 हिंदुस्तान आर्गेनिक कैमिकल्स लि0 और एसआई ग्रुप (जिसे पहले सेनेकरेडी हरदीलिया लि0 के नाम से जाना जाता था), टीपीएम कंसलटेंट्स (एचओसीएल और एसआई समूह के परामर्शदाता), सिंगापुर और दक्षिण अफ्रीका के निर्यातकों के अधिवक्ता, आयातक का अधिवक्ता, सिंगापुर के उच्चायुक्त के अधिकारी उपस्थित थे। मौखिक सुनवाई में भाग लेने वाले पक्षों से मौखिक रूप से प्रस्तुत सूचना को लिखित रूप में प्रस्तुत करने की सलाह दी गई थी। हितबद्ध पक्षकारों को अन्य हितबद्ध पक्षों द्वारा प्रस्तुत विचारों/सूचना के संबंध में खंडन संबंधी तर्क प्रस्तुत करने का अवसर दिया गया था। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षों से प्राप्त अनुरोधों पर उचित ढंग से विचार किया है।
- (xiii) जांच की प्रक्रिया के दौरान विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों और सूचना/साक्ष्यों पर इनके साक्ष्य द्वारा समर्थित होने की सीमा तक तथा जहां तक इन्हें वर्तमान जांच हेतु संगत समझा गया है, प्राधिकारी द्वारा विचार किया गया है।
- (xiv) प्राधिकारी ने जांच प्रक्रिया के दौरान दी गई सूचना की पर्याप्तता और सत्यता से अपने आपको संतुष्ट किया है। इस प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने संगत और आवश्यक समझी गई सीमा तक घरेलू उद्योग और उत्पादकों/निर्यातकों की मौके पर जांच की है। घरेलू उद्योग से क्षति संबंधी अतिरिक्त/पूरक ब्यौरे भी मांगे गए थे, जो प्राप्त हुए हैं।
- (xv) संबंधित नियमावली के नियम 16 के अनुसार इन जांच परिणामों के लिए विचारित आवश्यक तथ्यों/आधारों को ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों के समक्ष रखा गया है और इन पर दी गई टिप्पणियों पर अंतिम जांच परिणामों में विचार किया गया है।
- (xvi) नियम 6(7) के अनुसार प्राधिकारी द्वारा रखी गई सार्वजनिक फाइल के जरिए विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों के अगोपनीय अंश को हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण हेतु खुला रखा है।
- (xvii) सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर भारत में संबद्ध वस्तुओं की इष्टतम उत्पादन लागत और इसके निर्माण और बिक्री में आने वाली लागत ज्ञात करने के लिए लागत और आवेदक द्वारा प्रस्तुत सूचना संबंधी जांच की गई है ताकि यदि पाटन मार्जिन से

कम पाटनरोधी शुल्क का निर्धारण होता है तो यह घरेलू उद्योग की क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा ।

(xviii) वर्तमान जांच की प्रक्रिया के दौरान जहां कहीं भी किसी हितबद्ध पक्षकार ने सूचना देने से मना किया है या अन्यथा आवश्यक सूचना उपलब्ध नहीं कराई है अथवा जांच की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण रूप से बाधा पहुंचाई है, तो प्राधिकारी ने उपलब्ध प्राप्त तथ्यों के आधार पर इन जांच परिणामों को दर्ज किया है ।

(xix) वर्ष 2001 की सिविल अपील संख्या 1294 में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए निर्णय के अनुपालन में संबद्ध देशों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण किया गया है ।

(xx) हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना की पर्याप्तता और गोपनीयता के दावे के संबंध में जांच की गई थी । इस बात से संतुष्ट होने पर जहां आवश्यक समझा गया, प्राधिकारी ने गोपनीय दर्जा प्रदान किया है और इस सूचना को गोपनीय समझा गया है तथा इसे किसी अन्य पक्षकार के समक्ष प्रकट नहीं किया गया है । जहां भी संभव हो, गोपनीय आधार पर सूचना देने वाले पक्षकारों को गोपनीय आधार पर दी गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय अंश उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया था ।

(xxi) इस अधिसूचना में *** हितबद्ध पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना को प्रदर्शित करता है और पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा इन्हें गोपनीय माना गया है ।

ग. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु

ग.1 घरेलू उद्योग के विचार

5. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित मुद्दे उठाए गए हैं :-

- (i) वर्तमान समीक्षा जांच एक मध्यावधि जांच है । मूल जांच और वर्तमान मध्यावधि समीक्षा जांच में शामिल उत्पाद फिनाँल है । वर्तमान समीक्षा जांच में विचाराधीन उत्पाद मूल जांच में शामिल उत्पाद के समान है ।
- (ii) फिनाँल सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 27 और अध्याय 29 के अंतर्गत वर्गीकृत एक कार्बनिक रसायन है । घरेलू उद्योग ने यह अनुरोध किया है कि इन दोनों वर्गीकरणों के संबंध में शुल्क की सिफारिश की जानी चाहिए ।
- (iii) घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित फिनाँल और सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका और यूरोपीय संघ से आयातित फिनाँल समान उत्पाद हैं ।

- (iv) फिनाँल एक आधारभूत कार्बनिक रसायन है जिसे सामान्यतया सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 29 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। इसका विपणन दो ग्रेडों अर्थात् क्रिस्टलाइन और हाइड्रेटेड तथा दो रूपों-खुला/बल्क और पैकड में किया जाता है।
- (v) भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित फिनाँल और संबद्ध देशों से निर्यातित फिनाँल में कोई अंतर नहीं है। भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देशों से आयातित फिनाँल भौतिक और रसायनिक विशेषताओं की दृष्टि से तुलनीय है।
- (vi) फिनाँल का प्रयोग फिनाँल फॉर्मेलडीहाइड/रेजिन्स, लेमिनेट्स, प्लाइवुड, पार्टिकल बोर्ड, बिस फिनाँल-ए, अल्काइल फिनाँल, भेषज, डी फिनाँल ऑक्साइड आदि के विनिर्माण में किया जाता है।
- (vii) घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देशों से आयातित फिनाँल में कोई अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देशों से आयातित फिनाँल भौतिक और रसायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी (विश्व भर के अधिकांश उत्पादकों द्वारा अपनाई जाने वाली), कार्य और प्रयोगों, उत्पाद विनिर्देशनों, कीमत निर्धारण, वितरण और विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण की दृष्टि से तुलनीय है। ये दोनों तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। उपभोक्ताओं ने इन दोनों का एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग किया है। याचिकाकर्ताओं द्वारा उत्पादित फिनाँल और संबद्ध देशों से आयातित उत्पाद समान वस्तु हैं।

ग. 2 आयातकों, उपभोक्ताओं, निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

6. किसी भी आयातक, उपभोक्ता, निर्यातक और अन्य हितबद्ध पक्षकार ने विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के संबंध में कोई टिप्पणी या अनुरोध नहीं किया है।

ग. 3 प्राधिकारी द्वारा जांच

7. मूल जांच में शामिल उत्पाद फेनाँल था। चूंकि ये मध्यावधि जांच है इसलिए इस जांच में मूल जांच में शामिल उत्पाद शामिल है। विचाराधीन उत्पाद सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका और यूरोपीय संघ के मूल का या वहां से निर्यातित फिनाँल है। फिनाँल एक आधारभूत कार्बनिक रसायन है जिसे सामान्यतया सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय-29 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाता है। इस उत्पाद का विपणन दो रूपों-बल्क एवं पैकड में किया जाता है। बल्क बिक्रियां आम तौर पर खुले रूप में होती हैं जबकि पैकड परेषण काफी कम कंटेनर भार वाले हो सकते हैं और सामान्यतया ड्रमों में पैक किए जाते हैं। फेनाल का प्रयोग फेनाँल फार्मलडिहाइड रेजिन्स, लेमिनेट्स, प्लाईवुड, पार्टिकल बोर्डों, बिसफेनाँल-ए, अल्काइल फेनाँल, भेषजों, डिफिनाइल आक्साइड आदि में किया जाता है। भारतीय व्यापार वर्गीकरण के अनुसार इस उत्पाद का वर्गीकरण सीमाशुल्क टैरिफ शीर्ष सं. 2907.11 और 2707.60 के अंतर्गत किया जाता है। तथापि, ये सीमाशुल्क और आईटीसीएस वर्गीकरण मात्र संकेतात्मक हैं और वर्तमान जांच के कार्यक्षेत्र पर किसी भी तरह से बाध्यकारी नहीं हैं।

8. पाटनरोधी नियम के नियम 2(घ) में यह विनिर्दिष्ट है कि समान वस्तु से तात्पर्य उस वस्तु से है जो विचाराधीन उत्पाद से सभी प्रकार से समरूप एवं समान हो अथवा ऐसी किसी वस्तु की अनुपस्थिति में कोई अन्य वस्तु जिसकी विशेषताएं जांचाधीन वस्तुओं से अत्यधिक मिलती-जुलती हों।

9. याचिकाकर्ता का दावा है कि उसके द्वारा उत्पादित वस्तुएं और संबद्ध देशों के मूल की या वहां से निर्यातित वस्तुएं समान वस्तु है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित फिनाँल जो संबद्ध वस्तु से आयातित फिनाँल के समान है, में समान विशेषताएं हैं। उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित फिनाँल और संबद्ध देशों से आयातित फिनाँल नियमों के अर्थों के भीतर समान वस्तुएं हैं।

घ. घरेलू उद्योग

घ.1 घरेलू उद्योग के विचार

10. घरेलू उद्योग की स्थिति के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अनुरोध किए गए हैं:-

(i) यह याचिका मै. हिंदुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल लि. और एस आई ग्रुप (जिसे पहले सेनेकटेडी हरदीलिया लि. के नाम से जाना जाता था) द्वारा दायर की गई है। भारत में ऐसी 3 कंपनियां हैं जिन्होंने फिनाँल के उत्पादन हेतु क्षमता का सृजन किया है अर्थात् हिंदुस्तान ऑर्गेनिक केमिकल्स लि., एसआई ग्रुप (जिसे पहले सेनेकटेडी हरदीलिया लि. के नाम से जाना जाता था) और नेवेली लिग्नाइट। तथापि, नेवेली लिग्नाइट ने पिछले 3 वर्षों में फिनाँल का उत्पादन/बिक्री नहीं की है। जैसा कि कंपनी की वार्षिक रिपोर्टों से देखा गया है। अतः याचिकाकर्ता नियमावली, 1995 के नियम 2(ख) के अंतर्गत घरेलू उद्योग है।

(ii) याचिकाकर्ता का उत्पादन भारतीय उत्पादन का प्रमुख हिस्सा है और इसलिए याचिकाकर्ता को नियमावली के अर्थ के भीतर "घरेलू उद्योग" माना जाना चाहिए।

घ.2 निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार:

11. मै. मेरीसोल आरएसए (प्रा.) लि., दक्षिण अफ्रीका ने निम्नलिखित मुद्दे उठाए हैं :-

(i) याचिकाकर्ताओं ने पाटनरोधी जांच पर लागू प्रावधानों को गलत ढंग से समझा है। इन नियमों में समग्र रूप से घरेलू उद्योग को शामिल करने की सही ढंग से व्यवस्था है परंतु इसके लिए वे केवल तभी योग्य होंगे यदि घरेलू उद्योग की योग्यता संबंधी प्रावधानों के संबंध में दी गई शर्तों को पूरा किया जाता है। वर्तमान मामले के तथ्यों में

घरेलू उद्योग इन मुद्दों का समाधान करने में विफल रहा है और निर्दिष्ट प्राधिकारी नियमावली के दायरे में और वर्तमान में उपस्थित मुद्दों के अधिकार क्षेत्र के अनुसार जांच शुरू करने के मुद्दे पर सही हैं। एस आई ग्रुप को इस कारण से घरेलू उद्योग के दायरे से बाहर रखना चाहिए कि वे स्वयं आयातक हैं और उनका उत्पादन कैप्टिव खपत के लिए है।

- (ii) निर्दिष्ट प्राधिकारी को याचिकाकर्ताओं को प्रत्येक कंपनी का प्रोफार्मा IV ए उपलब्ध कराने का निर्देश देना चाहिए क्योंकि हरदेलिया को घरेलू उद्योग के दायरे से बाहर रखा जाना चाहिए।
- (iii) वर्तमान मामले के तथ्यों में हरदेलिया न केवल कैप्टिव उत्पादक है बल्कि उक्त जांच में संबद्ध वस्तु का आयातक भी है और इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी के अधिकार क्षेत्र और प्रक्रियाओं के आधार पर उन्हें जांच के शुरुआती स्तर पर घरेलू उद्योग से बाहर रखा जाना चाहिए था।
- (iv) नेवेली अब फिनाँल का उत्पादन नहीं करता है। यह कंपनी वर्ष 2004 में बंद हो गई थी। यह तथ्य याचिकाकर्ता को ज्ञात था, फिर भी बाजार में अपनी आपूर्ति को बढ़ाकर दिखाने के लिए उन्होंने याचिका में इसे एक उत्पादक के रूप में शामिल किया है।

घ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

12. प्राधिकारी ने इस संबंध में निर्यातकों द्वारा दिए गए तर्कों तथा रिकॉर्ड में उपलब्ध साक्ष्यों की जांच की है। घरेलू उद्योग की स्थिति के संबंध में नियम 2(ख) में निम्नानुसार व्यवस्था है :-

"घरेलू उद्योग" का अर्थ समान उत्पाद के विनिर्माण में शामिल तथा उस उत्पाद से संबंधित किसी कार्यकलाप में शामिल घरेलू उत्पादक हैं या वे उत्पादक जिनका उक्त वस्तु का समग्र उत्पादन उस उत्पाद के कुल घरेलू उत्पादन का प्रमुख हिस्सा बनता है, इसमें वे उत्पादक शामिल नहीं होंगे जो कथित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबद्ध हैं या स्वयं उसके आयातक हैं, ऐसे मामले में ऐसे उत्पादकों को घरेलू उद्योग का हिस्सा नहीं माना जाएगा।

13. प्राधिकारी नोट करते हैं कि एक याचिकाकर्ता एसआई ग्रुप (जिसे पहले सेनेक्टेडी हरदेलिया लि. के नाम से जाना जाता था) ने जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का आयात किया है। यह भी नोट किया गया है कि कंपनी द्वारा किए गए आयात शुल्क मुक्त श्रेणी और शुल्क प्रदत्त श्रेणी में किए गए थे और इन दोनों की मात्रा अधिक थी। इस कंपनी को मूल जांच में भी घरेलू उद्योग के दायरे से बाहर रखा गया था क्योंकि यह संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातक थे। वर्तमान जांच के तथ्यों और परिस्थितियों के मद्देनजर प्राधिकारी ने एस आई ग्रुप को घरेलू उद्योग के दायरे से बाहर रखना उचित समझा है। एस आई ग्रुप

को बाहर किए जाने के बाद याचिकाकर्ताओं को क्षति संबंधी सूचना उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया था, जिसे उन्होंने उपलब्ध कराया था। यह सूचना जांच में भाग लेने वाले अन्य हितबद्ध पक्षकारों को भेजी गई थी और उनसे संशोधित क्षति संबंधी सूचना पर उनकी टिप्पणियां यदि कोई हों, मांगी गई थीं।

ड अन्य मुद्दे :

ड 1 घरेलू उद्योग के विचार

14. घरेलू उद्योग द्वारा निम्नलिखित अन्य मुद्दे उठाए गए हैं :-

(i) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने पूर्व में पाटनरोधी शुल्क लागू करने की सिफारिश की थी, पाटनरोधी शुल्क लागू किए जाने के बाद कच्चे तेल की कीमत में भारी वृद्धि हुई जिसके परिणामस्वरूप विश्व भर में सभी उत्पादकों की उत्पादन लागत में भारी वृद्धि हुई। अतः संदर्भ कीमत अर्थहीन बन गई थी जिसके परिणामस्वरूप संबद्ध देशों से उत्पादकों और निर्यातकों द्वारा भारतीय बाजार में पाटित आयातों की भरमार हो गई थी।

(ii) मध्यावधि समीक्षा जांच को आवश्यक ठहराने वाले कानून के प्रावधान में स्पष्ट रूप से यह व्यवस्था है कि मध्यावधि समीक्षा जांच केवल "परिवर्तित परिस्थितियों" में ही शुरू की जा सकती है। परिवर्तित परिस्थितियों पर उन परिस्थितियों में परिवर्तन की दृष्टि से विचार किया जा सकता है जिनके अनुसार पाटनरोधी शुल्क लागू किया गया था।

(iii) उत्पाद की प्रकृति और उत्पादन के लिए निविष्टियों में उतार-चढ़ाव को देखते हुए ड्यूटी का बेंचमार्क रूप शुल्क का उचित रूप नहीं है और उपायों को परिवर्तनीय से शुल्क की तयशुदा मात्रा में बदलने के लिए समीक्षा करना अपेक्षित है।

(iv) निर्दिष्ट प्राधिकारी ने प्रतिवादी निर्यातकों से कुछ सम्पूरक सूचना मांगी हैं तथापि, ऐसी कोई सूचना सार्वजनिक फाइल में नहीं देखी गई है। इसका अर्थ यह है कि इन उत्पादकों द्वारा अतिरिक्त सूचना का कोई अगोपनीय अंश प्रस्तुत नहीं किया गया है।

ड 2 निर्यातक, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार:

15. मित्सुई ने यह बताया है कि उन्होंने प्राधिकारी के साथ पूरा सहयोग किया है। कंपनी ने यह तर्क दिया है कि याचिकाकर्ताओं द्वारा अगोपनीय आधार पर किए गए प्रकटन अपर्याप्त हैं। उन्होंने प्राधिकारी और याचिकाकर्ताओं के बीच जांच शुरूआत से पूर्व के पत्राचार जैसी सूचना का खुलासा करने के लिए कहा है।

16. याचिकाकर्ताओं ने सभी मुद्दों पर अत्यधिक गोपनीयता बरतने का दावा किया है। याचिकाकर्ताओं द्वारा दायर की गई अगोपनीय याचिका में सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की

पहचान उन पर पाटनरोधी शुल्क का आंकलन और संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 के अंतर्गत ऐसी किसी याचिका को दायर करने में अपेक्षित व्यापक प्रकटन मापदंडों और अपेक्षाओं का पालन नहीं किया गया है। याचिकाकर्ताओं ने अनुचित आधारों पर गोपनीयता का दावा किया है। गोपनीयता का यह दावा अवैध, स्वार्थ से ग्रस्त और अनुचित ठहराए जाने के काबिल है। उपलब्ध कराई गई सूचना किसी भी तरह से न तो पर्याप्त रूप से सारांशित है और न ही किसी भी तरह से सूचीबद्ध है।

17. दायर की गई याचिका की शायद यह सुनिश्चित करने के लिए जांच नहीं की गई है कि इसमें मध्यावधि समीक्षा जांच की शुरुआत को उचित ठहराया गया हो। प्राधिकारी द्वारा जांच की शुरुआत उनके अधिकार क्षेत्र से बाहर है। दायर की गई याचिका अपूर्ण है क्योंकि प्रफोर्मा के अनुसार आवेदन के खंडों का पूर्ण रूप से उत्तर नहीं दिया गया है और न ही साक्ष्य उपलब्ध कराए गए हैं।

18. आयात संबंधी आंकड़े 3 स्रोतों से लिए गए हैं। प्राप्त किए गए मूल आंकड़ों का प्रकटन नहीं किया गया है। विभिन्न स्रोतों से लिए गए चुनिंदा आंकड़ों पर भरोसा किया गया है।

19. मूल शुल्क संदर्भ कीमत आधार पर था और याचिकाकर्ताओं ने अपील में इसे चुनौती नहीं दी है।

20. बल्क और पैकड आयातों के संबंध में याचिकाकर्ताओं द्वारा साक्ष्य और सूचना उपलब्ध नहीं कराई गई है।

21. एसआई ग्रुप द्वारा किए गए आयातों के संबंध में सूचना का प्रकटन नहीं किया गया है। यह स्पष्ट नहीं है कि क्या इन आयातों को आयात विश्लेषण में शामिल किया गया है।

22. मेरीसोल आरएसए ने प्रौद्योगिकी में अंतर और मेरिसोल तथा याचिकाकर्ताओं द्वारा प्रयोग की गई उत्पादन प्रक्रिया के मुद्दे को उठाया है। इसके बावजूद याचिकाकर्ताओं ने बेंजीन और प्रोपेलीन को निविष्टियों के रूप में लेते हुए इनके आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन किया है।

23. शुल्क के रूप में परिवर्तन न्यायोचित नहीं है और प्राधिकारी ने इसे स्वीकार करने के लिए सही नहीं ठहराया है। वर्तमान जांच एक मध्यावधि समीक्षा है और जांच करते समय निर्दिष्ट प्राधिकारी की प्रक्रिया के अनुसार शुल्क के प्रकार यदि लागू हों उसी आधार पर होने चाहिए जैसे कि वे मूल जांच के दौरान थे। शुल्क के प्रकार में परिवर्तन के मुद्दे पर घरेलू उद्योग द्वारा बताए गए कारण तर्कहीन और साक्ष्यों से रहित हैं तथा इसलिए निर्दिष्ट प्राधिकारी को घरेलू उद्योग द्वारा बताए किसी भी आधार पर उनके अनुरोध को स्वीकार करने से पहले इन पर सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए।

ड 3 प्राधिकारी द्वारा जांच

24. वर्तमान जांच को न्यायोचित ठहराए जाने के लिए साक्ष्यों की पर्याप्तता हेतु दायर की गई याचिका की जांच की गई थी। इस संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियम 23 के अंतर्गत एक समीक्षा जांच की शुरुआत करना उचित होगा यदि समीक्षा को आवश्यक ठहराने वाले पर्याप्त आधार मौजूद हों। यह याचिका शुल्क लागू किए जाने के लिए प्राधिकारी द्वारा निर्धारित धन और पद्धति के अनुसार दायर की गई थी अतः प्राधिकारी को केवल इसी बात पर विचार करना अपेक्षित था कि क्या समीक्षा को न्यायोचित ठहराने के लिए पर्याप्त साक्ष्य मौजूद हैं।
25. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना की पर्याप्तता और गोपनीयता के दावे के संबंध में जांच की गई थी। इस बात से संतुष्ट होने पर जहां आवश्यक समझा गया, प्राधिकारी ने गोपनीय दर्जा प्रदान किया है और इस सूचना को गोपनीय समझा गया है तथा इसे किसी अन्य पक्षकार के समक्ष प्रकट नहीं किया गया है। जहां भी संभव हो, गोपनीय आधार पर सूचना देने वाले पक्षकारों को गोपनीय आधार पर दी गई सूचना का पर्याप्त अगोपनीय अंश उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया था।
26. आवेदक द्वारा प्रस्तुत सूचना में मध्यावधि समीक्षा जांच की शुरुआत करने के पर्याप्त प्रथम दृष्टया साक्ष्य दर्शाए गए हैं। इनसे संतुष्ट होने पर प्राधिकारी ने दिनांक 14 जुलाई, 2006 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसके तहत सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका और यूरोपीय संघ के मूल की अथवा वहां निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के आयातों से संबंधित पाटनरोधी मध्यावधि समीक्षा जांच की शुरुआत की गई थी।
27. जांच की शुरुआत के बाद प्राधिकारी ने जांच अवधि और क्षति अवधि के लिए आयात संबंधी सूचना उपलब्ध कराने के लिए डीजीसीआईएंड एस से अनुरोध किया था जिसे प्राधिकारी द्वारा प्राप्त किया गया था और क्षति निर्धारण हेतु निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा इस पर विचार किया गया है।
28. ग्रेड-वार सूचना-प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियमावली के अंतर्गत समान वस्तु के संबंध में घरेलू उद्योग को हुई क्षति का निर्धारण अपेक्षित है। नियमावली में उत्पाद की विभिन्न किस्मों या ग्रेडों के संबंध में अलग-अलग क्षति का आकलन करने की परिकल्पना नहीं की गई है। इसके अलावा, याचिकाकर्ताओं ने खुले और पैकड उत्पादों की उत्पादन लागत, बिक्री कीमत, लाभ/हानि के संबंध में अलग-अलग सूचना प्रस्तुत की है।
29. शुल्क के प्रकार में परिवर्तन - प्राधिकारी नोट करते हैं कि ऐसा कोई वैध आधार नहीं है जिसमें यह बताया गया हो कि समीक्षा जांच में शुल्क के प्रकार में परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। शुल्क के प्रकार की सिफारिश करने की शक्ति निर्दिष्ट प्राधिकारी के पास अंतरनिहित है और पाटनरोधी नियमावली के नियम 4(घ) में दिए गए उनके दायित्वों से उद्भूत होती है। मध्यावधि समीक्षा में निर्दिष्ट प्राधिकारी को पाटनरोधी नियमावली के नियम 10 और

11 के साथ पठित नियम 23 के अनुसार पाटन मार्जिन और क्षति का निर्धारण करना होता है। इसके परिणामस्वरूप मध्यावधि समीक्षा के दौरान निर्धारित पाटन मार्जिन के आधार पर शुल्क का समायोजन किया जाना आवश्यक है।

30. प्राधिकारी ने मेरीसोल आरएसए का मौके पर सत्यापन किया है और जैसा कि पाटन खंड में विचार किया गया है कंपनी द्वारा रखे गए रिकार्डों के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण किया जा रहा है।

31. एस आई द्वारा आयात - प्राधिकारी ने एस आई को घरेलू उद्योग के दायरे से बाहर रखा है और इसलिए एसआई द्वारा किए गए आयातों के संबंध में कोई तर्क प्रासंगिक नहीं है।

च. पाटन मार्जिन की गणना हेतु पद्धति

च.1 पाटन का निर्धारण: सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन

यूरोपीय संघ

यूरोपीय संघ के लिए सामान्य मूल्य

32. यूरोपीय संघ से किसी भी निर्यातक ने जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना का उत्तर नहीं दिया है। इसी उत्तर के अभाव में प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारणार्थ पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों पर विश्वास किया है। इस प्रयोजनार्थ सामान्य मूल्य का परिकलन आईसीआईएसएलओआर यूरोप में यथा वर्णित कच्ची सामग्री की कीमतों, मानक निविष्टि उत्पादन मानकों के अनुसार खपत, सुविधाओं, परिवर्तन और घरेलू उद्योग की अन्य लागतों के आधार पर किया गया है। इसके अलावा, 5% की दर पर तर्कसंगत लाभ जोड़ा गया है। इस पद्धति को अपनाकर सामान्य मूल्य का परिकलन बल्क के लिए **** अम.डॉ. प्रति मी.टन और पैकड सामग्री के लिए **** अम.डॉ. के रूप में किया गया है।

असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

33. प्राधिकारी ने ई यू से आयातों के संबंध में डीजीसीआईएस से प्राप्त सौदावार आंकड़ों पर विचार किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि यूरोपीय संघ ने 12010 मी.टन फिनाँल का निर्यात बल्क रूप में और 1229 मी.टन फिनाँल का निर्यात पैकड रूप में किया है। निर्यात कीमत को डीजीसीआईएस आंकड़ों के सौदावार ब्यौरों से लिया गया है। समुद्री भाड़ा, समुद्री बीमा, कमीशन, अंतरदेशीय भाड़ा, पत्तन व्यय, बैंक प्रभारों के संबंध में समायोजनों के पश्चात कारखाना द्वार निर्यात कीमत का परिकलन बल्क सामग्री के लिए **** अम.डॉ. प्रति मी.टन और पैकड सामग्री के लिए **** अम.डॉ. प्रति मी.टन के रूप में किया गया है।

दक्षिण अफ्रीका

34. मैं. मेरीसोल आरएसए (पीटीवाई) लि., दक्षिण अफ्रीका ने सहयोग किया है और सूचना प्रस्तुत की है। इस सूचना में यह देखा गया है कि निर्यातक ने भारत को उत्पाद का निर्यात पैकड और बल्क रूपों में किया था। यह भी देखा गया था कि निर्यातक ने घरेलू बाजार में भी पैकड और बल्क उत्पाद की बिक्री की थी। निर्यातक के सत्यापन के दौरान यह स्पष्ट किया गया था कि वे विश्व की एकमात्र कंपनी हैं, जो फिनाॅल का उत्पादन कोयले के माध्यम से करते हैं जबकि विश्व की अन्य सभी कंपनियां कमिन्स के माध्यम से फिनाॅल का उत्पादन करती हैं जिसमें बेंजीन और प्रोपेलीन मुख्य कच्ची सामग्री होते हैं। चूंकि उनकी उत्पादन प्रक्रिया अलग है, इसलिए उन्होंने आगे स्पष्ट किया है कि उनके द्वारा उत्पादित फिनाॅल फार्मेसी क्षेत्र में प्रयोग नहीं किया जा सकता है। तथापि, अन्य क्षेत्रों में इसके उपयोग समान रहते हैं और अलग-अलग प्रक्रियाओं से उत्पादित फिनाॅल के बाजार में कीमतों में कोई अंतर नहीं है। उन्होंने स्वीकार किया है कि भारतीय घरेलू उत्पादकों द्वारा उत्पादित फिनाॅल और उनके द्वारा उत्पादित फिनाॅल समान वस्तु हैं।

दक्षिण अफ्रीका में सामान्य मूल्य

35. इस प्रयोजनार्थ सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु निर्यातक द्वारा प्रदत्त सौदावार आंकड़ों पर भरोसा किया गया है। जांच अवधि के दौरान दक्षिण अफ्रीका से निर्यातक ने भारत को **** मी.टन बल्क फिनाॅल और **** मी.टन पैकड फिनाॅल का निर्यात किया है। जांच अवधि के दौरान यथा सत्यापित अंतरदेशीय भाड़ों और प्रहस्तन प्रभारों को सामान्य मूल्य के परिकलन हेतु समायोजित किया गया है। इस पद्धति से बल्क उत्पाद के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण **** अम.डॉ. प्रति मी.टन और पैकड उत्पाद के लिए **** अम.डॉ. प्रति मी.टन के रूप में किया गया है।

मेरीसॉल आरएसए पीटीवाई लि.के लिए निर्यात कीमत

36. सहयोगी निर्यातक के लिए निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु उपलब्ध कराए गए सौदावार आंकड़ों पर विश्वास किया गया है। करखाना द्वार स्तर पर निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु अंतरदेशीय भाड़े, प्रहस्तन प्रभारों, समुद्री भाड़े, बीमा, ऋण लागत और एजेंटों के कमीशन के संबंध में किए गए व्ययों को समायोजित किया गया है। प्रदत्त और सत्यापित आंकड़ों के आधार पर निर्यात कीमत का निर्धारण बल्क उत्पादों के लिए **** अम.डॉ. प्रति मी.टन और पैकड उत्पाद के लिए **** अम.डॉ.प्रति मी.टन के रूप में किया गया है

असहयोगी निर्यातकों के निर्यात कीमत

37. मेरीसॉल के अलावा दक्षिण अफ्रीका से किसी भी निर्यातक ने उत्तर नहीं दिया है। निर्यात कीमत के निर्धारण के लिए प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंडएस द्वारा प्रदत्त सौदावार व्यौरों पर विश्वास किया है। निर्यातों पर किए गए व्ययों संबंधी समायोजन दक्षिण अफ्रीका से

सहयोगी निर्यातक द्वारा प्रदत्त सूचना के अनुसार किए गए हैं। समायोजन करने के पश्चात् कारखाना द्वारा निर्यात कीमत का परिकलन बल्क सामग्री के लिए **** अम.डॉ.प्रति मी.टन के रूप में और पैकड सामग्री के लिए **** अम.डॉ.प्रति मी.टन के रूप में किया गया है।

सिंगापुर

38. मित्सुई फिनाॅल, सिंगापुर पीटीई लि. (उत्पादक) और मित्सुई एंड कं. लि. सिंगापुर (निर्यातक) ने जांच में सहयोग किया है और सूचना प्रस्तुत की है। मित्सुई फिनाॅल सिंगापुर, पीटीई लि. (जिसे एतदपश्चात् एमपीएस कहा गया है) एक निजी लिमिटेड कंपनी है जो सिंगापुर कंपनी अधिनियम के अंतर्गत अधिनिगमित है। एमपीएस पूर्ववर्ती मित्सुई फिनाॅल, सिंगापुर, पीटीई लि. और मित्सुई बिस फिनाॅल सिंगापुर पीटीई लि. (जिसे एतद् पश्चात् एमबीएस कहा गया है) के विलय से बनी है और इनका विलय 27 सितंबर, 2005 को हस्ताक्षरित विलय संबंधी करार के अनुपालन में 1 जनवरी, 2006 से किया गया है। विलय से पूर्व एमपीएस और एमबीएस दोनों मित्सुई कैमिकल कार्पोरेशन, जापान के अधीनस्थ थीं, विलय से पूर्व एमबीएस बिस फिनाॅल के विनिर्माण कार्यकलापों में शामिल थीं। 1 जनवरी, 2006 को कंपनी ने अपना नाम मित्सुई फिनाॅल, सिंगापुर पीटीई लि. से बदलकर मित्सुई फिनाॅल्स सिंगापुर पीटीई लि. रख लिया था। इसके अलावा इस मामले में निर्यातक अर्थात् मित्सुई एंड कंपनी लि., सिंगापुर (जिसे एतदपश्चात् एमबीके कहा गया है) स्वयं उत्पादक नहीं हैं। जांच अवधि के दौरान भारत को निर्यातित फिनाॅल मित्सुई फिनाॅल्स सिंगापुर पीटीई लि. द्वारा उत्पादित था। मित्सुई एंड कंपनी लि. की मित्सुई फिनाॅल्स में 5% की शेयरधारिता है। सत्यापन के दौरान कंपनी ने स्पष्ट किया कि जांच अवधि के दौरान घरेलू बाजार में बिक्रियां संबंधित और असंबंधित उपभोक्ताओं को की गई थीं। असंबंधित उपभोक्ताओं तथा पाइप लाइन के जरिए उपभोक्ताओं को जिनके साथ कंपनी ने 12 से 15 साल की दीर्घावधिक संविदाएं की थीं, को बिक्रियां मौके पर आधार पर की गई हैं और सहमत फार्मूले के आधार पर कीमतें प्रभारित की गई हैं। यह फार्मूला प्रमुख 'कच्ची सामग्री' अर्थात् बेंजीन की कीमत पर आधारित है और/या एसीआई क्षेत्र में फेनाॅल की प्रचलित कीमतों पर आधारित है। उन्होंने आगे यह बताया कि वे फेनाॅल की बिक्री घरेलू और निर्यात बाजार में बल्क रूप में कर रहे हैं और पैकड रूप में उनकी कोई बिक्रियां नहीं हैं।

सिंगापुर के लिए सामान्य मूल्य

39. सिंगापुर के लिए सामान्य मूल्य के निर्धारणार्थ सहयोगी निर्यातक द्वारा प्रदत्त सौदावार सूचना पर विश्वास किया गया है। सामान्य मूल्य के निर्धारणार्थ घरेलू बाजार में निर्यातक द्वारा की गई सभी बिक्रियों पर विचार किया गया है। इस मामले में निर्यातक ने यह तर्क प्रस्तुत किया है कि सामान्य मूल्य के निर्धारण में घरेलू बाजार में मौके पर की गई बिक्री पर विचार किया जाना चाहिए क्योंकि बिक्री की शर्तें, कीमत निर्धारण नीति, वितरण प्रणाली में स्थिति और ऐसी बिक्री की मात्रा भारत को की गई निर्यात बिक्री के अनुरूप है। यह भी तर्क दिया गया है कि घरेलू बाजार में मौके पर की गई बिक्री की पर्याप्तता (5%) और लागत से कम कीमत पर की गई बिक्री (80%- 20%) के परीक्षण को पूरा करती है अर्थात् मौके पर की गई

बिक्री " व्यापार की सामान्य स्थिति " में की गई बिक्री की अर्हता को पूरा करती है । इसके अलावा यह भी कहा गया है कि सामान्य मूल्य के निर्धारण में संविदा बिक्री (पाइप लाइनों के जरिए बिक्री) पर विचार नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि ऐसी बिक्री के लिए प्रभारित कीमतें, कीमत निर्धारण नीति, एचएमटी, वितरण प्रणाली आदि भारत को की गई बिक्री के अनुरूप नहीं है । सीमा शुल्क टैरिफ अधि की धारा 9(क) (1) (ग) के अनुसार सामान्य मूल्य से उत्पादन के घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य स्थिति में समान वस्तु के लिए अनुरूप कीमत अभिप्रेत है । पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 6(1) के अनुसार निर्यात बिक्री के साथ सामान्य मूल्य की तुलना व्यापार के समान स्तर पर की जाना अपेक्षित है और इसमें भिन्नता के गुणगोषों पर जरूरी रियायत देना भी आवश्यक है, जो बिक्री की शर्तों व निबंधनों में भिन्नता सहित कीमत तुलनात्मकता को प्रभावित करती है । कानून के उपबंध के अनुसार बिक्री की शर्तों में भिन्नता के मामले में ही रियायत की आवश्यकता है और यदि बिक्री की शर्तें भिन्न हों, तो व्यापार की सामान्य स्थिति में की गई बिक्री को छोड़ा नहीं जाना चाहिए । इस तथ्य के मद्देनजर कि संविदा बिक्री और मौके पर बिक्री दोनों को ही व्यापार की सामान्य स्थिति में की गई बिक्री की पात्रता है, अतः सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु सभी प्रकार की बिक्री पर विचार करने और संविदा बिक्री को घरेलू बाजार में ऐसी बिक्रियों की शर्तों में भिन्नता के कारण न छोड़ने को प्राधिकारी द्वारा उचित समझा गया है ।

इस मामले में यदि संविदा बिक्रियों की उच्चतर मात्राओं के लिए आवश्यक समायोजन किया जाना है तो सामान्य मूल्य और अधिक हो जाएगा । अतः सामान्य मूल्य के निर्धारणार्थ मौके पर और संविदा बिक्री समेत सभी बिक्रियों पर विचार किया गया है । यह भी तर्क दिया गया है कि संबंधित पार्टी के साथ किए गए सौदों को सामान्य मूल्य के निर्धारण से बाहर रखा जाना चाहिए । यह तर्क कि सभी संबंधित पार्टी सौदों को सामान्य मूल्य के निर्धारण से बाहर रखा जाना चाहिए अव्यवहार्य है क्योंकि पाटनरोधी करार के अनुसार व्यापार की सामान्य प्रक्रिया के दौरान किए गए सौदों पर विचार किया जाता है । निर्यातक ने कहीं भी यह तर्क नहीं दिया है कि सौदे व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में नहीं किए गए थे । निर्यातक की वार्षिक रिपोर्ट में यह बिल्कुल स्पष्ट रूप से कहा गया है कि संबंधित पक्षकारों से सौदे व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में किए गए थे । इसके अलावा, यह भी नोट किया गया है कि संबंधित और असंबंधित पक्षकारों को की गई दीर्घावधिक संविदा बिक्रियां इसी फार्मूले के आधार पर की गई थी । तथापि, वास्तविक कीमतों में संविदाकारी पक्षकारों द्वारा सहमत अवधि के आधार पर अंतर है । इस मामले में निर्यातक द्वारा ऐसी कोई सामग्री उपलब्ध नहीं कराई गई है जिसमें यह दर्शाया गया हो कि संबंधित उपभोक्ताओं की कीमतें उनके संबंधों द्वारा प्रभावित होती थीं । अतः प्राधिकारी ने संबंधित बिक्रियों को व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में की गई बिक्रियां माना है और सामान्य मूल्य के निर्धारण में इन्हीं पर विचार किया है । निर्यातक द्वारा अंतरदर्शीय भाड़े और प्रहस्तन प्रभारों के संबंध में दावा किए गए व्ययों का सामान्य मूल्य के निर्धारण के दौरान सत्यापन और सत्यापन के पश्चात उनका समायोजन किया गया है । बल्क उत्पाद के लिए सामान्य मूल्य **** अम.डॉ.प्रति मी.टन के रूप में परिकलित किया गया है । सहयोगी निर्यातक ने कोई पैकड बिक्रियां नहीं की हैं इसलिए पैकड उत्पाद के लिए सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु बल्क उत्पाद के सामान्य मूल्य के निर्धारण में पैकिंग प्रभारों को जोड़ा गया है । इस पद्धति से पैकड उत्पाद के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण **** अम.डॉ.प्रति मी.टन के रूप में किया गया है ।

मित्सुई फिनाँल सिंगापुर पीटीई लि. (उत्पादक) और मित्सुई एंड कंपनी लिमिटेड सिंगापुर (निर्यातक) हेतु निर्यात कीमत

40. निर्यातक और आयातक द्वारा प्रदत्त सौदावार सूचना पर विश्वास किया गया है । जांच अवधि के दौरान भारत को बल्क फिनाँल के निर्यातों की कुल मात्रा **** अम.डॉ.प्रति मी.टन सीआईएफ कीमत के समग्र स्तर पर **** मी.टन के रूप में सत्यापित की गई थी । कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत के परिकलन के लिए **** अम.डॉ.प्रति मी.टन की दर पर समुद्री भाड़ा **** अम.डॉ.प्रति मी.टन की दर पर बीमा और **** अम.डॉ.प्रति मी.टन की दर पर ऋण लागत के संबंध में समायोजन किए गए थे । इन समायोजनों के पश्चात कारखाना द्वार स्तर पर निर्यात कीमत बल्क उत्पाद के लिए **** अम.डॉ.प्रति मी.टन के रूप में परिकलित की गई थी ।

असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

41. निर्यात कीमत के निर्धारणार्थ प्राधिकारी ने डीजीसीआईएस द्वारा प्रदत्त सौदावार ब्यौरों पर भरोसा किया है । निर्यातों पर आए खर्च हेतु समायोजन सिंगापुर से सहयोगी निर्यातक द्वारा प्रदत्त सूचना के अनुसार किए गए हैं । इन समायोजनों के पश्चात कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत की गणना बल्क सामग्री के लिए **** अम.डॉ.प्रति मी.टन और पैकड सामग्री के लिए **** अम.डॉ.प्रति मी.टन के रूप में की गई है ।

पाटन मार्जिन

42. उपर्युक्त निर्धारित सामान्य मूल्यों और निर्यात कीमतों के आधार पर पाटन मार्जिनों की गणना निम्नानुसार की गई है :-

	सामान्य मूल्य		निर्यात कीमत		भारित पाटन मार्जिन
	बल्क	पैकड	बल्क	पैकड	
दक्षिण अफ्रीका					
मेरिसोल आरएसए (पीटीवाई) लि.	***	***	***	***	*** (26.36%)
असहयोगी निर्यातक	***	***	***	***	*** (68.54%)
सिंगापुर					
मित्सुई फिनाँल सिंगापुर प्रा.लि.- उत्पादक तथा मित्सुई एंड कं. लि.-निर्यातक	***		***		*** (26.34)
असहयोगी निर्यातक	***	***	***	***	***

					(33.79%)
यूरोपीय संघ					
असहयोगी निर्यातक	***	***	***	***	***
					(29.23%)

ऊपर आकलित पाटन मार्जिन न्यूनतम से अधिक हैं ।

क. क्षति निर्धारण की विधि तथा क्षति एवं कारणात्मक संबंध की जांच

क.1 घरेलू उद्योग के विचार:

43. घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित विचार प्रस्तुत किए हैं :-

- निरपेक्ष रूप में तथा भारत में उत्पादन एवं खपत के सापेक्ष संबद्ध देशों से फिर्नाल के आयात में अत्यधिक वृद्धि हुई है ।
- संबद्ध देशों की निर्यात कीमत पाटित स्तर पर ही रही है । इसके अलावा निविष्टियों की कीमतों में वृद्धि के अनुपात में इन कीमतों में वृद्धि नहीं हुई है ।
- सुधार दर्शाने के बाद घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्री तथा क्षमता उपयोग में गिरावट आई है ।
- पहले लगाए गए पाटनरोधी शुल्क तथा घरेलू उद्योग द्वारा अनुकूलतम से कम कीमतों की पेशकश के बावजूद उत्पादन, बिक्री तथा क्षमता उपयोग में गिरावट आई है ।
- लाभ/हानि का निर्धारण आबद्ध निविष्टियों के बाजार मूल्य के आधार पर रिलायंस इंडस्ट्रीज लि. बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी से संबंधित मामले में उच्चतम न्यायालय के निर्णय के आलोक में किया जाना अपेक्षित है । वास्तविक उत्पादन लागत के आधार पर लाभ/हानि के निर्धारण का प्राधिकारी का निर्णय उच्चतम न्यायालय के निर्णय के अनुरूप नहीं है ।
- मूल्यहास तथा ब्याज पूर्व लाभ, ब्याज पूर्व लाभ, कर पूर्व लाभ (पीबीडीआईटी, पीबीआईटी, पीबीटी) नकद लाभ, निवेश से आय में वर्ष 2004-05 तक सुधार के पश्चात इन सब में अत्यधिक गिरावट आई है ।
- मूल्यहास तथा ब्याज-पूर्व लाभ, ब्याज पूर्व लाभ, कर-पूर्व लाभ में आई गिरावट इतनी अधिक थी कि जांच अवधि में पीबीडीआईटी, पीबीआईटी तथा पीबीटी सभी ऋणात्मक हो गए ।

- viii. घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में अत्यधिक गिरावट आई, जबकि आयातों का बाजार हिस्सा बढ़ गया।
- ix. पाटित आयातों ने भारत में मांग में बाजार हिस्से पर अत्यधिक कब्जा कर लिया है।
- x. संबद्ध देशों में से प्रत्येक देश के आयातों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों की उल्लेखनीय स्तर तक कटौती हो रही है।
- xi. संबद्ध देशों से आयातों ने 2004-05 के बीच तथा जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की कीमतों में भारी कमी करने पर विवश कर दिया। इस प्रकार इस अवधि में आयातों के कारण कीमतों में मंदी छाई रही।
- xii. घरेलू उद्योग के रोजगार के स्तर में मामूली गिरावट आई है परंतु इनमें कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ है। भुगतान की गई मजदूरी में वृद्धि हुई है।
- xiii. घरेलू उद्योग का सामान सूची स्तर बढ़ गया। उत्पादन में कमी/कमी किए जाने के बावजूद सामान सूची में वृद्धि हुई।
- xiv. मात्रा तथा कीमत मानदंडों दोनों रूपों में बिक्री, उत्पादन, क्षमता उपयोग, बाजार हिस्से, नकद प्रवाह, मुनाफे, निवेश से आय आदि में गिरावट के रूप में घरेलू उद्योग की वृद्धि नकारात्मक थी। समग्रतः घरेलू उद्योग को नकारात्मक वृद्धि का सामना करना पड़ा।

घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न मानदंड मिलेजुले रूप में और संचयी रूप में इस तथ्य को स्थापित करते हैं कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है।

छ.2 निर्यातकों, आयातकों एवं अन्य हितबद्ध पक्षों के विचार :

44. निर्यातकों, आयातकों एवं अन्य हितबद्ध पक्षों के विचार निम्नलिखित हैं :-

- (i) निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा यह जांच नहीं की गई कि क्या प्रदत्त जानकारी उसी प्रारूप तथा तरीके से प्रस्तुत की गई है जैसे कि इंटरनेशनल बिजनेस इन्फॉर्मेशन सर्विस एवं कांडला पत्तन द्वारा उपलब्ध कराई गई है। डीजीसीआईएंड एस, कांडला पत्तन तथा इंटरनेशनल बिजनेस इन्फॉर्मेशन सर्विस द्वारा प्रदत्त जानकारी के गोपनीय होने का दावा नहीं किया जा सकता।

- (ii) प्रपत्र IV-क में दी गई जानकारी को समुचित रूप से सूचीबद्ध नहीं किया गया है और यह डब्ल्यूटीओ करार के अंतर्गत निर्धारित मानदंडों को पूरा नहीं करती । इसके अलावा सूचीबद्ध जानकारी पूर्ण नहीं है ।
- (iii) ग्रेडवार कोई जानकारी प्रदान नहीं की गई है ।
- (iv) मेरिसोल आरएसए ने उपयोगिता लागत में उल्लेखनीय वृद्धि होने का खंडन किया है ।
- (v) निर्यातों की मात्रा, आबद्ध खपत, आबद्ध को छोड़कर मांग, निवल बिक्री प्राप्ति से संबंधित जानकारी के गोपनीयता के कारणों का ब्यौरा याचिका में नहीं दिया गया है ।
- (vi) लागत निर्धारण सूचना इंगित नहीं की गई है ।
- (vii) उत्पादन लागत के निर्धारण का तरीका तथा विभिन्न उत्पादों, सह-उत्पादों तथा उप-उत्पादों के नाम नहीं बताए गए हैं ।
- (viii) याचिकाकर्ता को कोई वास्तविक क्षति नहीं हुई है ।
- (ix) यह तर्क दिया गया है कि दक्षिण अफ्रीका से निर्यातों में गिरावट आई है, भारत में कुल आयातों में गिरावट आई है, कुल आयातों के साथ-साथ मांग में भी दक्षिण अफ्रीका के बाजार हिस्से में गिरावट आई है । स्थापित क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग, आबद्ध खपत, घरेलू बिक्री तथा मांग, सब में गिरावट आई है ।
- (x) कथित पाटन तथा क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं हैं । विभिन्न डब्ल्यूटीओ निर्णयों में कारणात्मक संबंध के समुचित विश्लेषण की आवश्यकता प्रतिपादित की गई है ।
- (xi) चूंकि घरेलू उद्योग मांग को पूरा करने में सक्षम नहीं है, अतः प्राधिकारी द्वारा सार्वजनिक हित के मुद्दे पर भी विचार किया जाना चाहिए । हर्डिलिया स्वयं भी फिनाल का आयात एवं आबद्ध खपत हेतु इसका उपयोग कर रहे हैं ।
- (xii) शुल्क के संशोधन के संबंध में याचिकाकर्ता का दावा न्यायोचित नहीं है ।
- (xiii) जहां तक कथित पाटित आयातों में वृद्धि का प्रश्न है, यह उल्लेखनीय है कि भारतीय बाजार की मांग को पूरा करने की दृष्टि से घरेलू उद्योग की क्षमता बहुत सीमित है । घरेलू उद्योग की क्षमता घरेलू बाजार की जरूरतों से दूर होने के साथ-साथ संबद्ध वस्तुओं का इसका उत्पादन भी आबद्ध खपत तथा निर्यातों से

जुड़ा हुआ है। अतः यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है कि कथित पाटित आयातों में वृद्धि से घरेलू उद्योग प्रभावित हुआ है, जबकि बाजार में संबद्ध वस्तुएं उपलब्ध कराने में घरेलू उद्योग की अक्षमता इन आयातों में वृद्धि के लिए उत्तरदायी रही है।

छ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच:

45. प्राधिकारी द्वारा डीजीसीआईएस के आंकड़ों पर विचार किया गया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह उल्लेख नहीं किया गया है कि प्रपत्र IV क को किस प्रकार समुचित रूप से सूचीबद्ध नहीं किया गया है और यह डब्यूटीओ करार की पूर्ति कैसे नहीं करता। नीचे दिए गए पैराग्राफों में प्राधिकारी द्वारा नियमावली के अनुसरण में क्षति मानदंडों का विश्लेषण किया गया है।

- (क) ग्रेडवार सूचना - प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियमावली में समान वस्तु के संदर्भ में घरेलू उद्योग को हुई क्षति के निर्धारण की अपेक्षा की गई है। नियमावली में किसी उत्पाद के विभिन्न रूपों अथवा ग्रेड के संबंध में क्षति के अलग-अलग आकलन की परिकल्पना नहीं की गई है।
- (ख) हितबद्ध पक्षों द्वारा गोपनीय आधार पर उपलब्ध कराई गई जानकारी की जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के अनुसार की गई है। संतुष्ट होने पर प्राधिकारी द्वारा, जहां जरूरी था, गोपनीयता प्रदान की गई और ऐसी जानकारी गोपनीय मानी गई और इसे अन्य हितबद्ध पक्षों के समक्ष उद्घाटित नहीं किया गया। जहां कहीं संभव था, गोपनीय आधार पर जानकारी देने वाले पक्षों को गोपनीय आधार पर प्रस्तुत जानकारी का पर्याप्त अगोपनीय पाठ उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया।
- (ग) उत्पादन लागत - प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान निर्धारण के प्रयोजनार्थ अपनाई गई उत्पादन लागत प्राधिकारी द्वारा निरंतर अपनाई गई पद्धति के आधार पर अपनाई गई है।

क्षति का संचयी आकलन:

46. वर्तमान जांच से संबद्ध देश सिंगापुर, दक्षिण अफ्रीका तथा यूरोपीय संघ हैं। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 11 में यह प्रावधान है कि यदि पाटनरोधी जांच एकाधिक देश के संबंध में की जा रही हो तो निर्दिष्ट प्राधिकारी ऐसे आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन करेंगे, यदि यह निर्धारित होता हो कि (क) प्रत्येक देश से आयातों के संबंध में निश्चित पाटन मार्जिन निर्यात कीमत को प्रतिशत के रूप में व्यक्त करने पर दो प्रतिशत से अधिक हो और प्रत्येक देश से आयातों की मात्रा तीन प्रतिशत, कुल आयात समान वस्तु के आयात के सात प्रतिशत से अधिक हो और (ख) आयातों के प्रभाव का संचयी आकलन आयातित वस्तु तथा समान घरेलू वस्तुओं के बीच प्रतिस्पर्धा की शर्तों के आलोक में उचित हो। वर्तमान जांच एक मध्यावधि समीक्षा जांच है, जिसे नियमावली के नियम 23 के अंतर्गत शुरू किया गया है।

47. जानकारी की जांच के उपरोक्त प्राधिकारी ने यह पाया है कि घरेलू उद्योग की संबद्ध वस्तुओं की कीमतें संबद्ध देशों से आ रही संबद्ध वस्तुओं की कीमतों से तुलनीय हैं। इनका आयात एक ही टैरिफ वर्गीकरण के अंतर्गत किया गया है। आयातित उत्पाद तथा घरेलू उत्पाद के प्रयोक्ता एवं प्रयोक्ता उद्योग एक समान हैं। अतः प्राधिकारी आयातित उत्पादों तथा घरेलू समान उत्पाद के बीच प्रतिस्पर्धा की शर्तों के आलोक में घरेलू रूप से उत्पादित समान वस्तु पर संबद्ध वस्तुओं के आयातों के प्रभाव के संचयी आकलन को उचित मानते हैं।

पाटित आयातों की मात्रा का प्रभाव:

48. जहां तक पाटित आयातों की मात्रा का प्रश्न है, प्राधिकारी से यह विचार करने की अपेक्षा की जाती है कि पाटित आयातों में समग्र रूप में अथवा भारत में उत्पादन अथवा खपत के सापेक्ष अत्यधिक वृद्धि हुई है। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II (ii) में निम्नानुसार कहा गया है:-

मांग का आकलन एवं बाजार हिस्सा

49. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने मांग का निर्धारण घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री, अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री तथा सभी स्रोतों से भारत में संबद्ध वस्तुओं के आयातों के योग के रूप में किया है। इस प्रकार आकलित मांग का ब्यौरा निम्नलिखित तालिका में दिया गया है :-

	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	जुलाई 05-मार्च 06	वार्षिकीकृत जांच अवधि
घरेलू उद्योग	मीट.	42039	37583	44265	28143	23221	30961
अन्य उत्पादक	मीट.	30525	32329	34099	26952	18760	25013
संबद्ध देश से आयात-मध्यावधि	मीट.	9094	15928	16698	30088	22949	30598
अन्य देशों से आयात	मीट.	12245	49497	48337	63353	50462	67282
आबद्ध को छोड़कर कुल मांग	मीट.	93903	135337	143399	148536	115391	153855
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	144	153	158	123	164
आबद्ध	मीट.	3069	2761	1311	1523	1506	2008
आबद्ध सहित कुल मांग	मीट.	96972	138098	144710	150059	116897	155863
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	142	149	155	121	161
<u>आबद्ध को छोड़कर बाजार हिस्सा</u>							
घरेलू उद्योग	%	44.77	27.77	30.87	18.95	20.12	20.12
अन्य उत्पादक	%	32.51	23.89	23.78	18.14	16.26	16.26
संबद्ध देश से आयात-मध्यावधि	%	9.68	11.77	11.64	20.26	19.89	19.89
अन्य देशों से आयात	%	13.04	36.57	33.71	42.65	43.73	43.73

आबद्ध सहित बाजार हिस्सा							
घरेलू उद्योग	%	43.35	27.21	30.59	18.75	19.86	19.86
अन्य उत्पादक	%	34.64	25.41	24.47	18.98	17.34	17.34
संबद्ध देश से आयात-मध्यावधि	%	9.38	11.53	11.54	20.05	19.63	19.63
अन्य देशों से आयात	%	12.63	35.84	33.40	42.22	43.17	43.17

50. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुओं के आयातों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है जबकि उत्पाद की मांग में सकारात्मक प्रवृत्ति के बावजूद क्षति की जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग तथा अन्य घरेलू उत्पादकों की बिक्री में गिरावट आई है ।

कीमत प्रभाव

51. जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का प्रश्न है, नियमावली के अनुबंध-II (ii) में निम्नानुसार उल्लेख किया गया है ।

"नियम 18 के उप नियम (2) में यथा उल्लिखित कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव के संबंध में निर्दिष्ट प्राधिकारी यह विचार करेंगे कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा भारी कीमत कटौती की जा रही है या क्या ऐसे आयातों का प्रभाव अन्यथा कीमतों में अत्यधिक मात्रा में कमी करना अथवा कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती । "

52. समीक्षा जांच में यह जांच करना अपेक्षित होता है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण कीमत पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ा है अथवा शुल्क वापस ले लिए जाने के बाद क्या कीमत पर प्रभाव की पुनरावृत्ति होने की संभावना है ।

	2003-04	2004-05	2005-06	खुला- जांच अवधि	पैकड- जांच अवधि
संबद्ध देशों की पहुंच कीमत	32,508	57,319	52,323	46,584	65,413
यूरोपीय संघ	38,344	58,388	52,728	46,489	66,986
दक्षिण अफ्रीका	21,758	53,300	53,572	46,343	62,780
सिंगापुर	39,529	68,731	48,579	47,124	67,228
एनएसआर (रु./मी.टन)	***	***	***	***	***
संबद्ध देशों द्वारा कीमत कटौती (रु./मी.टन)	***	***	***	***	***

यूरोपीय संघ	***	***	***	***	***
दक्षिण अफ्रीका	***	***	***	***	***
सिंगापुर	***	***	***	***	***
संबद्ध देशों द्वारा कीमत कटौती (%)	***	***	***	***	***
क्षति रहित कीमत				***	***
संबद्ध देशों द्वारा कम कीमत पर बिक्री (रु./मी.टन)				***	***
यूरोपीय संघ				***	***
दक्षिण अफ्रीका				***	***
सिंगापुर				***	***
संबद्ध देशों द्वारा कम कीमत पर बिक्री (%)				***	***

53. सह भी नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से खुले रूप में सामग्री का निर्यात जिस कीमत पर किया जाता है वह भारतीय उत्पादकों द्वारा जिस कीमत पर सामग्री की बिक्री की जा रही है उससे कम है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि मूल जांच में संबद्ध देशों पर पाटनरोधी शुल्क लगाने के प्रयोजनार्थ संदर्भ कीमत 710 अम.डॉ. से 778 अम.डॉ. के बीच थी। यह नोट किया गया है कि जांच अवधि के दौरान पूर्ववर्ती जांच की तुलना में सीआईएफ मूल्य भी निर्धारित संदर्भ कीमत से अधिक था, जो इस बात का द्योतक है कि पाटनरोधी शुल्क कारगर नहीं थे। तथापि, वस्तुओं के कारण उल्लेखनीय कीमत कटौती और घरेलू उद्योग द्वारा कम कीमत पर बिक्री का प्रभाव निरंतर जारी है।

कीमत अधिक्रमण तथा मंदी

	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
बिक्री की लागत	रु./मी.टन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति)	सूचीबद्ध	100	101	134	135	137
प्रति यूनिट बिक्री कीमत	रु./मी.टन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	156	128	125
औसत पहुंच मूल्य	रु./मी.टन		***	***	***	***

54. घरेलू उद्योग की लागत तथा कीमत संरचना एवं संबद्ध देशों से आयातों के पहुंच मूल्य यह दर्शाते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में लागत में लगभग 37% की वृद्धि हुई है जबकि कीमतों में केवल 25% वृद्धि हुई है। जांच अवधि के दौरान आयातों के पहुंच मूल्य में वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई देने के बाद इसमें फिर अत्यधिक गिरावट आई है।

55. भारतीय उत्पादकों द्वारा सामग्री की बिक्री जिस कीमत पर की जा रही है, उससे निवेश पर उचित आय प्राप्त नहीं होती और यह घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से कम है।

घरेलू उद्योग से संबंधित अन्य आर्थिक मानदंड

56. नियमावली के अनुबंध-II में यह अपेक्षा की गई है कि क्षति निर्धारण में संबद्ध देशों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के प्रभाव की वस्तुनिष्ठ जांच की जाए। इसके अलावा नियमावली के अनुबंध-II (iv) में निम्नानुसार उल्लेख किया गया है :-

संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में उस उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संबंधित आर्थिक कारकों एवं सूचकों को शामिल किया जाएगा, जिसमें बिक्री, मुनाफे, उत्पादन के बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश से आय अथवा क्षमता के उपयोग में प्राकृतिक तथा संभावित गिरावट; घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन मार्जिन की सीमा; नकद प्रवाह, सामान सूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक तथा संभावित नकारात्मक प्रभाव शामिल हैं।

वास्तविक तथा संभावित उत्पादन, क्षमता तथा क्षमता उपयोग, बिक्री

57. घरेलू उद्योग की क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग तथा बिक्री की मात्रा से संबंधित सूचना निम्नानुसार है :-

	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिक
स्थापित क्षमता	मी.टन	40000	40000	40000	40000	30000	40000
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	100.00	100.00	100.00		100.00
उत्पादन	मी.टन	***	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	94.49	114.07	67.77		81.20
क्षमता उपयोग	%	106	100	121	72	86	86
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	94.49	114.07	67.77		81.20
घरेलू बिक्री	मी.टन	***	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	89.40	105.30	66.95		73.65
संबद्ध देशों से आयात	मी.टन	9094	15928	16698	30088	22949	30598
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	175.15	183.61	330.86		336.47

58. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग का उत्पादन, क्षमता उपयोग तथा बिक्री जांच की समस्त अवधि के दौरान नकारात्मक प्रवृत्ति दर्शाते हैं जबकि संबद्ध देशों से आयातों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। संबद्ध देशों सहित विभिन्न स्रोतों से आयात बढ़ जाने के कारण बिक्री

में आई गिरावट की वजह से घरेलू उद्योग के उत्पादन में भी गिरावट आई है । संबद्ध देशों द्वारा जो कीमत घरेलू उद्योग के लिए क्षति रहित कीमत है, से कम पर संबद्ध वस्तुओं का उल्लेखनीय मात्रा में निर्यात किया जा रहा है । उत्पादन में गिरावट का प्रत्यक्ष प्रभाव क्षमता उपयोग में गिरावट पर पड़ा है ।

घरेलू उद्योग की बिक्री लागत एवं बिक्री कीमत

	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
बिक्री लागत	रु./मी.टन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	101	134	135	137
प्रति यूनिट बिक्री कीमत	रु./मी.टन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	106	156	128	125

59. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यद्यपि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री लागत में वृद्धि हुई है, तथापि बिक्री कीमत में वर्ष 2004-05 तक सकारात्मक प्रवृत्ति देखे जाने के पश्चात इसमें अत्यधिक गिरावट आई है । यद्यपि बिक्री कीमत में वृद्धि वर्ष 2004-05 तक लागत की तुलना में अधिक थी, तथापि, तत्पश्चात बिक्री कीमत में वृद्धि लागत में वृद्धि के अनुपात में नहीं थी । लागत में वृद्धि का मुख्य कारण बेंजीन तथा एलपीजी, जो पेट्रो आधारित है, की निविष्टि कीमत में वृद्धि होना था ।

लाभ, निवेश से आय तथा नकद प्रवाह

60. घरेलू उद्योग के लाभ, निवेश से आय तथा नकद प्रवाह की जांच की गई है जो निम्नानुसार है :-

	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिक
ब्याज तथा कर पूर्व लाभ	रु./लाख	***	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	126.47	319.62	49.50	22.83	22.83
नियोजित पूंजी से आय का % (एनएफए आधार पर)	%	***	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	130.40	250.83	48.64	21.89	21.89
नकद लाभ	रु./लाख	***	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	132.94	347.74	49.53	20.29	20.29

61. उपर्युक्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि क्षति की जांच अवधि के दौरान लाभप्रदता तथा घरेलू उद्योग द्वारा नियोजित पूंजी से आय पर उल्लेखनीय प्रभाव पड़ा है, हालांकि लाभप्रदता तथा नियोजित पूंजी से आय सकारात्मक रही है।

रोजगार तथा मजदूरी

62. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग का घटक एक बहु-उत्पाद तथा बहु-स्थान कंपनी है, अतः घरेलू उद्योग के रोजगार स्तर पर पाटन का प्रत्यक्ष प्रभाव होना संभव नहीं है। घरेलू उद्योग के रोजगार के स्तर तथा मजदूरी की स्थिति का ब्यौरा निम्नानुसार है :-

	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिक
रोजगार (जनशक्ति)	संख्या	***	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	99.41	100.45	96.36	96.36	96.36
मजदूरी	रुपए/लाख	***	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	108.42	126.70	130.64	135.02	135.02

63. उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग का रोजगार स्तर लगभग स्थिर बना रहा है। मजदूरी, सकारात्मक प्रवृत्ति दर्शाती है।

उत्पादकता में वास्तविक तथा संभावित गिरावट

64. घरेलू उद्योग की उत्पादकता, निम्नलिखित तालिका में दर्शाई गई है :-

	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिक
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	मी.टन	***	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	95.05	113.56	70.33	84.26	84.26
प्रति दिवस उत्पादकता	मी.टन	***	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	94.49	114.07	67.77	81.20	81.20

65. उत्पादन में गिरावट के साथ-साथ क्षति अवधि में घरेलू उद्योग की उत्पादकता में भी गिरावट आई। संबद्ध देशों और अन्य देशों से आयातों में वृद्धि के कारण बिक्री में आई कमी की वजह से इसमें गिरावट आई।

सामान सूची

66. निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग की सामान सूची की जांच की गई, जिसका ब्यौरा नीचे तालिका में दर्शाया गया है :-

	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि
औसत स्टॉक	मी.टन	***	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	359.05	510.74	480.27	280.77
बिक्री दिवसों की संख्या के रूप में औसत स्टॉक	संख्या	4	18	21	31	22
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	401.62	485.05	717.41	508.30

67. उपर्युक्त के आधार पर यह नोट किया गया है कि घरेलू उद्योग के सामान सूची के स्तर में जांच अवधि के दौरान वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई ।

68. जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का प्रश्न है, निर्दिष्ट प्राधिकारी से यह विचार करने की अपेक्षा की जाती है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण उल्लेखनीय कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में उल्लेखनीय स्तर तक मंदी लाना अथवा कीमत वृद्धि को रोकना है, जो अन्यथा उल्लेखनीय स्तर तक होता । घरेलू बाजार पर आयातों के प्रभाव के आकलन के उद्देश्य से निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा क्षति अवधि के दौरान आयात कीमतों का विश्लेषण किया गया । यह पाया गया कि जांच की अवधि के दौरान आयातों का प्रति पीएमटी पहुंच मूल्य सभी संबद्ध देशों में बल्क फिनाँल की निवल बिक्री कीमत और क्षति रहित कीमत से कम है । यह भी पाया गया कि जांच की अवधि के दौरान आयातों का प्रति पीएमटी पहुंच मूल्य सभी संबद्ध देशों में पैकड फिनाँल की निवल बिक्री कीमत से अधिक है और यूरोपीय संघ तथा सिंगापुर में पैकड फिनाँल की क्षति रहित कीमत से अधिक है, परंतु दक्षिण अफ्रीका में पैकड फिनाँल से कम है । संबद्ध देशों से कुल आयातों में से पैकड तथा बल्क आयात क्रमशः 9% तथा 91% है । सीमाशुल्क में कमी के परिणामस्वरूप आयातों की पहुंच कीमत भी कम हो गई । पाटित आयातों को छोड़कर अन्य धारकों, जो घरेलू बाजार में कीमतों को प्रभावित करते होंगे, के विश्लेषण हेतु घरेलू उद्योग में प्रतिस्पर्धा के कारण लागत संरचना में परिवर्तन, यदि कोई हो तथा प्रतिस्पर्धा विकल्पों की कीमतों की भी जांच की गई है । इस उत्पाद का कोई व्यावहारिक विकल्प नहीं है और पाटित कीमतों के कारण ही कीमतें प्रभावित हुई ।

69. निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा करों तथा शुल्कों, रिबेटों, छूटों तथा मालभाड़े व परिवहन को छोड़कर बिक्री कीमत पर विचार करके घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति का निर्धारण किया गया । आयात की पहुंच कीमत का निर्धारण 1% पहुंच शुल्क तथा लागू मूल सीमाशुल्क सहित भारित औसत सीआईएफ आयात कीमत पर विचार करके किया गया है । निवल बिक्री प्राप्ति तथा आयातों की पहुंच कीमत की तुलना बल्क तथा पैकड फिनाँल के लिए अलग-अलग की जाती है । बल्क फिनाँल के मामले में संबद्ध देशों से आयातों का पहुंच मूल्य जांच अवधि

के दौरान संबद्ध वस्तुओं के संबंध में घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से कम था और इस प्रकार घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में कटौती हुई । कीमत कटौती की मार्जिन 1-10% थी ।

70. कम कीमत पर बिक्री, क्षति के आकलन का एक महत्वपूर्ण सूचक है; अतः निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा क्षति रहित कीमत निर्धारित की गई और कम कीमत पर बिक्री की सीमा ज्ञात करने के लिए इसकी तुलना पहुंच मूल्य से की गई । घरेलू उत्पादक के लिए क्षति रहित कीमत की गणना करते समय जांच अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की उत्पादन लागत पर समुचित विचार किया गया । यह पाया गया कि सभी संबद्ध देशों में, जांच की अवधि के दौरान बल्क फिनाँल के आयातों का प्रति पीएमटी पहुंच मूल्य जांच अवधि हेतु घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित क्षति रहित कीमत से कम है । यह भी पाया गया कि जांच अवधि के दौरान यूरोपीय संघ तथा सिंगापुर के संबंध में, जांच अवधि के दौरान आयातों का प्रति पीएमटी पहुंच मूल्य पैकड फिनाँल की क्षति रहित कीमत से अधिक था, परंतु दक्षिण अफ्रीका से पैकड फिनाँल के मामले में यह कम था । कम कीमत पर बिक्री की मार्जिन 10-20 % थी ।

वृद्धि

71. घरेलू उद्योग के विभिन्न आर्थिक मानदंडों की जांच से यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क के बावजूद घरेलू उद्योग के मात्रा तथा कीमत से संबंधित विभिन्न मानदंड नकारात्मक प्रवृत्ति दर्शाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग की वृद्धि नकारात्मक रही है ।

पूंजी जुटाने की क्षमता

72. घरेलू उद्योग द्वारा वर्ष 2004-05 के बाद और जांच अवधि के दौरान कोई पूंजी निवेश नहीं किया गया है ।

क्षति से संबंधित निर्णय

73. आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं की मांग में 61% (वार्षिकीकृत) वृद्धि हुई । इसी अवधि में घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्री घटकर 73.67% रह गई । आधार वर्ष की तुलना में घरेलू बिक्री में वर्ष 2004-05 में 5% वृद्धि हुई थी, तथापि वर्ष 2005-06 तथा जांच अवधि में बिक्री घटकर क्रमशः 67% तथा 74% रह गई । आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान उत्पादन घटकर 81% रह गया । जांच अवधि के दौरान क्षमता उपयोग घटकर 86% रह गया, जो वर्ष 2002-03 में 106% था । बिक्री के दिवसों की संख्या के रूप में औसत स्टॉक, जो 2002-03 में 4 दिन था, जांच अवधि के दौरान बढ़कर 22 दिन हो गया । घरेलू उद्योग तथा अन्य उत्पादकों का बाजार हिस्सा 2002-03 में क्रमशः 43% तथा 35% था, जांच अवधि के दौरान घटकर क्रमशः 20% तथा 17% रह गया । संबद्ध देशों से आयात, जो वर्ष 2002-03 में 9094 मी.टन था, जांच अवधि के दौरान

बढ़कर 30598 मी.टन (वार्षिकीकृत) हो गया । मांग में अच्छी वृद्धि के बावजूद आयात में वृद्धि तथा बिक्री, उत्पादन, क्षमता उपयोग में तदनु रूप गिरावट मात्रा के रूप में घरेलू उद्योग को हुई क्षति दर्शाती है ।

74. संबद्ध देशों से आयातों का पहुंच मूल्य वर्ष 2003-04 की तुलना में 2004-05 में बढ़ गया । तथापि, 2005-06 तक जांच अवधि में इसमें अत्यधिक गिरावट आई । आधार वर्ष की तुलना में घरेलू उद्योग की बिक्री लागत में 2004-05 में 34%, 2005-06 में 35% और जांच अवधि में 37% वृद्धि हुई । आधार वर्ष की तुलना में घरेलू उद्योग की औसत बिक्री कीमत में 2004-05 के दौरान 56% वृद्धि हुई । तथापि, 2004-05 की तुलना में बिक्री कीमत में 2005-06 तथा जांच अवधि में गिरावट आई । संबद्ध देशों से आयातों के कारण बिक्री कीमत में कीमत कटौती 2005-06 में नकारात्मक थी और जांच अवधि में यह अत्यधिक बढ़ गई । लाभ की भी यही प्रवृत्ति दर्शाता है और आधार वर्ष की तुलना में 2004-05 के दौरान इसमें 220% वृद्धि हुई । वर्ष 2005-06 तक जांच अवधि में लाभ में उल्लेखनीय गिरावट आई । आधार वर्ष की तुलना में यह 2005-05 में घटकर 49.50% तथा जांच अवधि में 23% रह गया । नियोजित पूंजी से आय भी यही प्रवृत्ति दर्शाती है । कंपनी के वित्तीय कार्य निष्पादन में वर्ष 2004-05 तक सुधार हुआ, परंतु 2005-06 और जांच अवधि में इसमें अत्यधिक गिरावट आई ।

75. घरेलू उद्योग की विक्रय कीमत प्रवृत्ति से ज्ञात होता है कि वर्ष 2005-06 में आयातों के पहुंच मूल्य में गिरावट के कारण बिक्री कीमत में कमी आई, जबकि बिक्री की लागत में कोई गिरावट नहीं आई थी । तथापि, जांच अवधि के दौरान पहुंच मूल्य में और भी गिरावट आई, जिसके परिणामतः कीमत कटौती सकारात्मक हो गई और बिक्री कीमत पर दबाव बना रहा । वर्ष 2005-06 तथा जांच अवधि के दौरान बिक्री कीमत में और भी गिरावट आई, जबकि इसी अवधि में बिक्री की लागत में मामूली वृद्धि हुई ।

76. जैसा कि ऊपर विश्लेषण किया गया है, विभिन्न मानदंडों का मूल्यांकन यह दर्शाता है कि घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में वर्ष 2002-03 से 2004-05 तक उल्लेखनीय सुधार हुआ । तथापि, वर्ष 2005-06 और जांच अवधि के दौरान कार्य निष्पादन में गिरावट आई ।

अन्य ज्ञात कारक तथा कारणात्मक संबंध:

77. जांच अवधि के दौरान वर्तमान जांच से संबद्ध देशों तथा अन्य देशों, जिनके विरुद्ध जांच प्रगति पर है, से आयात होता रहा । इन देशों के अलावा, अन्य देशों से आयात अधिक कीमतों पर हुए हैं ।

मांग में संकुचन एवं/अथवा खपत के तरीके में परिवर्तन

	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	जांच अवधि	जांच अवधि वार्षिक
आबद्ध को छोड़कर कुल मांग	मी.टन	93903	135337	143399	148536	115391	153855
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	144.12	152.71	158.18	163.84	163.84
आबद्ध मांग सहित कुल मांग	मी.टन	96972	138098	144710	150059	116897	155863
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100.00	142.41	149.23	154.74	160.73	160.73

78. उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि विचाराधीन उत्पाद की मांग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है अतः घरेलू उद्योग को हुई क्षति का कारण मांग में कमी नहीं है ।

विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों की व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां एवं उनके बीच प्रतिस्पर्धा

79. संबद्ध वस्तुओं का आयात मुक्त रूप से किया जा सकता है और घरेलू बाजार में कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां नहीं हैं । घरेलू उद्योग के घटक एक-दूसरे से तथा साथ ही साथ संबद्ध वस्तुओं की पहुंच कीमत से भी प्रतिस्पर्धा करते हैं । घरेलू उद्योग की कीमत का निर्धारण संबद्ध वस्तुओं की पहुंच कीमत से होता है । इसके अलावा भारतीय बाजार में अन्य स्रोतों से आयातों की उपस्थिति भी उल्लेखनीय है ।

प्रौद्योगिकी विकास एवं निर्यात कार्य निष्पादन

80. हितबद्ध पक्ष ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति के कारण के रूप में प्रौद्योगिकी अथवा प्रौद्योगिकी से संबंधित मुद्दों को नहीं उठाया है ।

घरेलू उद्योग द्वारा निर्यात

81. जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग का निर्यात केवल 206 मी.टन है, जो इसके उत्पादन के 1% से भी कम बनता है । अतः निर्यातों ने इसके समग्र कार्य निष्पादन को प्रभावित नहीं किया होगा ।

कारणात्मक संबंध

82. उपर्युक्त कारक यह दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग को क्षति ऊपर विश्लेषित किसी भी कारक द्वारा नहीं हुई है ।

83. संबद्ध देश से फीनॉल के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क संदर्भ कीमत के रूप में लगाया गया था । कच्चे माल की कीमतों में निरंतर वृद्धि के कारण बिक्री की लागत में बढ़ोत्तरी होने से आयात कीमतें भी बढ़ गई, जिसके कारण शुल्क निष्प्रभावी हो गया । संदर्भ कीमत से

अधिक पहुंच मूल्य पर हुए आयात पर कोई पाटनरोधी शुल्क नहीं लगता, अतः पाटित कीमतों पर आयात निरंतर किया जाता रहा मानो कोई पाटनरोधी शुल्क वजूद में था ही नहीं। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं की मांग में 61% वृद्धि के बावजूद इसी अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री घटकर 73.65% रह गई।

84. वर्ष 2003-04 की तुलना में पहुंच मूल्य 2004-05 में 76% बढ़ गया। इसी अवधि में वर्ष 2004-05 के दौरान बिक्री की लागत में 33%, बिक्री कीमत में 46% लाभों में 253% की वृद्धि, उत्पादन में 20% की वृद्धि और घरेलू बिक्री में 17% वृद्धि हुई। वर्ष 2004-05 में क्षमता उपयोग 121% था। वर्ष 2003-04 की तुलना में पहुंच मूल्य घटकर 2004-05 में 91% रह गया। इसी अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री की लागत में बढ़ोत्तरी के बावजूद बिक्री कीमत में 82%, मुनाफे में 15% और बिक्री की मात्रा में 64% गिरावट आई जबकि आयातों में 80% वृद्धि हुई। औसत सामान सूची बढ़कर 31 दिन हो गई। उत्पादन में 59% गिरावट आई और कुल क्षमता की तुलना में क्षमता उपयोग में 72% गिरावट आई। वर्ष 2005-06 की तुलना में जांच अवधि के दौरान पहुंच मूल्य और भी घटकर 92% रह गया। इसी अवधि में बिक्री की लागत में लगभग 1% वृद्धि हुई जबकि बिक्री कीमत और घटकर 91% तथा मुनाफा घटकर 46% रह गया।

85. उपर्युक्त विश्लेषण संकेत करता है कि पहुंच मूल्य में गिरावट और संबद्ध देशों से आयातों में वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और लाभ में अत्यधिक गिरावट आई। इसके साथ ही बिक्री की मात्रा, उत्पादन और क्षमता उपयोग पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। पाटित आयातों के अलावा ऐसा कोई और कारक निर्दिष्ट अधिकारी के ध्यान में नहीं आया है जिसके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो। इससे पाटित आयातों और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध स्थापित हो जाता है।

ज. पाटन निरंतर होने अथवा इसकी पुनरावृत्ति की संभावना

86. इस जांच परिणाम के खंड च में किए गए विश्लेषण के अनुसार पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बावजूद संबद्ध देशों से पाटन निरंतर होता रहा। ऐसा कोई साक्ष्य रिकार्ड पर नहीं आया है जो यह संकेत करता हो कि पाटनरोधी शुल्क वापस ले लिए जाने पर पाटन बंद हो जाएगा; अतः प्राधिकारी का यह अभिमत है कि संबद्ध देशों से पाटन निरंतर होते रहने की संभावना है।

झ. घरेलू उद्योग को क्षति निरंतर होते रहने अथवा इसकी पुनरावृत्ति की संभावना

87. जैसा कि इस जांच परिणाम के खंड-छ में विश्लेषण किया गया है, संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बावजूद घरेलू उद्योग को क्षति निरंतर होती रही। पाटनरोधी शुल्क संदर्भ कीमत के रूप में था। कच्चे माल की कीमतों में वृद्धि के परिणामस्वरूप बिक्री की लागत में भी कटौती हुई, परंतु कीमत भी बढ़ जाने से पाटनरोधी शुल्क निष्प्रभावी हो गया। वर्ष 2005-06 में संबद्ध देशों से पाटन बढ़ने के कारण घरेलू

उद्योग के कार्य निष्पादन में तेजी से गिरावट आई । जैसा कि पहले ही विश्लेषण किया गया है, पाटित आयातों में वृद्धि के कारण बिक्री कीमत, लाभ, बिक्री की मात्रा, उत्पादन तथा घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा; अतः प्राधिकारी का अभिमत है कि पाटनरोधी शुल्क वापस ले लिए जाने पर घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में गिरावट आएगी ।

ज. उपर्युक्त पर विचार करने के पश्चात् प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि

क. संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं का भारत को निर्यात उनके सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप पाटन हुआ है;

ख. पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ;

(ग) और संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क वापस ले लिए जाने पर पाटन निरंतर होने अथवा इसकी पुनरावृत्ति होने अथवा घरेलू उद्योग की क्षति में वृद्धि होने की संभावना है ।

झ. भारतीय उद्योग के हित एवं अन्य मुद्दे

89. प्राधिकारी मानते हैं कि पाटनरोधी शुल्क लगाने से भारत में इस उत्पाद की कीमतें प्रभावित हो सकती हैं । तथापि, पाटनरोधी उपायों के कारण भारतीय बाजार में निष्पक्ष-प्रतिस्पर्धा में कोई कमी नहीं आएगी । इसके विपरीत पाटनरोधी उपायों के कारण पाटन पद्धतियों से अर्जित अनुचित लाभ समाप्त हो जाएंगे, घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में गिरावट पर रोक लगेगी और संबद्ध वस्तुओं के उपभोक्ताओं को व्यापक पसंद उपलब्ध रहने में यह सहायक होगा । प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी उपाय लागू करने से संबद्ध देशों से आयात किसी भी प्रकार से प्रतिबंधित नहीं होंगे अतः उपभोक्ताओं के लिए इस उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी । उपभोक्ता इसे अब भी इसकी आपूर्ति के एक अथवा एकाधिक स्रोतों से प्राप्त कर सकते हैं ।

90. सामान्य तौर पर पाटनरोधी शुल्कों का उद्देश्य पाटन की अनुचित बाजार पद्धतियों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समाप्त करके भारतीय बाजार में खुली तथा उचित प्रतिस्पर्धा की स्थिति को बहाल करना है, जो देश के भी सामान्य हित में है । पाटनरोधी उपाय लागू करने से संबद्ध देशों से आयात किसी भी प्रकार से प्रतिबंधित नहीं होंगे अतः उपभोक्ताओं के लिए इस उत्पाद की उपलब्धता प्रभावित नहीं होगी ।

ट. सिफारिशें

91. संबद्ध देशों से आयातों के कारण पाटन की संभावना एवं क्षति के सकारात्मक निर्धारण को देखते हुए प्राधिकारी का यह अभिमत है कि संबद्ध देशों से आयातों के विरुद्ध उपायों को जारी रखना जरूरी है । तथापि, संबद्ध देशों से पाटन के वर्तमान स्तर और घरेलू उद्योग को

हुई क्षति के मद्देनजर प्राधिकारी का मत है कि इस समय लागू उपाय में संशोधन की आवश्यकता है। अतः प्राधिकारी संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर पाटनरोधी शुल्क जरूरी समझते हैं और निम्नलिखित रूप में तथा तरीके से इसे लगाने की सिफारिश करते हैं।

92. इस समय संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं पर पाटनरोधी शुल्क संदर्भ कीमत के रूप में है। प्रमुख, कच्चे माल की कीमतों में उतार-चढ़ाव के कारण संदर्भ कीमत घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने में निष्प्रभावी सिद्ध हुई है अतः प्राधिकारी का अभिमत है कि घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए निश्चित शुल्क लगाना उचित होगा।

93. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कम से कम शुल्क के नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन की मार्जिन अथवा क्षति की मार्जिन के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क, जो भी कम हो, लगाने की संस्तुति करते हैं, ताकि घरेलू उद्योग की क्षति को दूर किया जा सके। प्राधिकारी संबद्ध देशों के मूल के अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के सभी आयातों पर नीचे दी गई तालिका पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने की संस्तुति करते हैं।

शुल्क तालिका

क्र. सं.	टैरिफ मद	वस्तुओं का विवरण	उद्गम देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1.	2907.1 1 तथा 2707.6 0	फीनॉल	सिंगापुर	सिंगापुर	मित्सुई फीनॉल सिंगापुर प्रा.लि.	मै. मित्सुई एंड कं. लि.	218.26	मी.टन	अम.डॉ.
2.	वही	वही	सिंगापुर	सिंगापुर	मित्सुई फीनॉल सिंगापुर प्रा.लि.	उपर्युक्त के अलावा कोई भी	218.26	मी.टन	अम.डॉ.
3.	वही	वही	सिंगापुर	सिंगापुर	उपर्युक्त के अलावा कोई भी	उपर्युक्त के अलावा कोई भी	218.26	मी.टन	अम.डॉ.
4.	वही	वही	सिंगापुर	सिंगापुर को छोड़कर कोई अन्य देश	कोई भी	कोई भी	218.26	मी.टन	अम.डॉ.
5.	वही	वही	संबद्ध देशों के अलावा कोई भी देश	सिंगापुर	कोई भी	कोई भी	218.26	मी.टन	अम.डॉ.
6.	वही	वही	दक्षिण अफ्रीका	दक्षिण अफ्रीका	मै. मेरिसॉल आरएसए प्रा.लि.	मै. मेरिसॉल आरएसए प्रा.लि.	206	मी.टन	अम.डॉ.
7.	वही	वही	दक्षिण अफ्रीका	दक्षिण अफ्रीका	मै. मेरिसॉल आरएसए प्रा.लि.	उपर्युक्त के अलावा कोई भी	206	मी.टन	अम.डॉ.
8.	वही	वही	दक्षिण अफ्रीका	दक्षिण अफ्रीका	उपर्युक्त के अलावा कोई भी	उपर्युक्त के अलावा कोई भी	206	मी.टन	अम.डॉ.

9.	वही	वही	दक्षिण अफ्रीका	दक्षिण अफ्रीका के अलावा कोई भी देश	कोई भी	कोई भी	206	मी.टन	अम.डॉ.
10	वही	वही	संबद्ध देशों के अलावा कोई भी देश	दक्षिण अफ्रीका	कोई भी	कोई भी	206	मी.टन	अम.डॉ.
11	वही	वही	यूरोपीय संघ	यूरोपीय संघ	कोई भी	कोई भी	212	मी.टन	अम.डॉ.
12	वही	वही	यूरोपीय संघ	यूरोपीय संघ के अलावा कोई भी देश	कोई भी	कोई भी	212	मी.टन	अम.डॉ.
13	वही	वही	संबद्ध देशों के अलावा कोई भी देश	यूरोपीय संघ	कोई भी	कोई भी	212	मी.टन	अम.डॉ.

94. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3 , 8 I, 9 तथा 9 क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी प्रकार के सीमाशुल्कों सहित सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के अधीन सीमाशुल्क विभाग द्वारा आकलित निर्धारणीय मूल्य होगा ।

95. इस आदेश के विरुद्ध कोई अपील उक्त अधिनियम के संबंधित प्रावधानों के अनुसरण में सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क एवं सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष दायर की जा सकेगी ।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY**(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 13th July, 2007

**Final Findings
(Mid-term Review)**

Subject: Anti-Dumping (Mid-term Review) investigation concerning imports of Phenol originating in or exported from Singapore, South Africa and European Union.

No. 15/4/2006-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 (hereinafter referred to as the Act) as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995 (hereinafter referred to as the Rules);

A. BACKGROUND

2. WHEREAS, having regard to above Rules the Designated Authority (hereinafter also referred to as the Authority) notified final findings vide Notification No.14/4/2002-DGAD dated 13.02.2003 recommending imposition of anti-dumping duties on all imports of Phenol originating in or exported from Singapore, South Africa and European Union. In the original investigation the Preliminary findings were notified by the Designated Authority vide Notification No. 14/4/2002-DGAD dated 24.06.2002. Final findings of the Authority were notified by the Designated Authority vide Notification No. 14/4/2002-DGAD dated 13.02.2003 and the final duty was imposed on the subject goods vide Customs Notification No.47/2003-Cus. dated 24.3.2003.

3. The Designated Authority, in terms of section 9A (5) of said Act. received a substantiated application from M/s Hindustan Organic Chemicals Ltd. and M/s SI Group-India Ltd., Mumbai requesting for review and continuation of the anti-dumping duties levied on the subject goods, for another five years on the grounds that the dumping had continued in spite of imposition of anti-dumping duty on imports of subject goods from subject countries and the domestic industry continued to suffer injury on account of dumping by the subject countries. It was also claimed that the anti-dumping duty was not sufficient to provide due relief to the domestic industry and cessation of anti-dumping duty would result in intensified injury to the domestic industry. The Designated Authority issued a public notice No. 15/4/2006-DGAD dated 14.7.2006, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping (Mid-term Review) investigations, to examine whether the expiry of anti dumping duty would lead to continuation or recurrence of dumping, injury or both.

B. GENERAL DISCLOSURE

4. The procedure described below has been followed with regard to the investigation:

i) The Designated Authority under the above Rules, received an application filed by M/s. Hindustan Organic Chemicals Ltd. and SI Group (formerly known as Schenectady Herdillia Ltd.) requesting initiation of midterm review investigation for review and enhancement of anti dumping duties in force concerning imports of Phenol (hereinafter referred as Phenol or subject goods) originating in or exported from Singapore, South Africa and European Union (hereinafter referred to as subject countries).

ii) The information provided by the applicant showed sufficient prima facie justification to initiate a mid tem review investigation. On being satisfied, the Authority issued a public notice dated 14th July, 2006 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating antidumping midterm review investigation concerning imports of the subject goods originating in or exported from Singapore, South Africa and European Union.

iii) The Authority forwarded a copy of the public notice to the following known producers and/or exporters in the subject countries

- Hungarom-Europe-2000 Company, Hungary
- A H Marks and Company Limited, England
- Phenolchemie GmbH, Germany
- Enichem, Italy
- Mitsui & Co. Ltd. Singapore
- Merisol, South Africa

and provided them opportunity to provide relevant information and make their views known in writing within forty days or extended time from the date of the letter in accordance with the Rule 6(2).

iv) The Embassies of the subject countries in New Delhi were informed about the initiation of the investigation, in accordance with Rule 6(2), with a request to advise the exporters/producers in their respective countries to respond to the questionnaire within the prescribed time.

v) The Authority forwarded a copy of the Initiation notification to following known importers, consumers, industrial users of subject goods in India.

- C. J. Shah and Company, Mumbai
- Haresh Kumar and Company, Mumbai
- PCL Industries New Delhi
- Kantilal Manilal and Company Mumbai
- Sonkamal Enterprises Mumbai

- Khetan Brothers Mumbai
- Shubam Dyes & Chemicals Limited Delhi
- Acron Enterprises Ahmedabad
- Naiknavare Chemicals Limited Mumbai
- Paras Dyes & Chemicals New Delhi
- Torrent Pharmaceuticals Limited Gujrat
- United Phosphorous Ltd. Mumbai
- Resins & Plastic Ltd. Mumbai
- Kailash Polymers New Delhi
- Centrum Metalics Pvt. Ltd. Mumbai
- Wonder Laminates Pvt. Ltd. West Bengal
- Meghdev Enterprises Ahmedabad
- Satguru International New Delhi
- High Polymer Labs Ltd. New Delhi
- Rainbow Colours & Chemicals Gujrat
- Bleach Marketing Pvt. Ltd. Gujrat
- Karmen International (P) Ltd. Tamil Nadu
- Krishna Antioxidants Pvt. Ltd. Mumbai
- NGP Industries Ltd. New Delhi
- Farmson Pharmaceutical Gujrat Ltd. Baroda
- India Glycols Ltd. New Delhi
- Singh Plasticisers and Resins (I) Pvt. Ltd. New Delhi
- National Plywood Industries Ltd. West Bengal

and advised them to provide relevant information in the form and manner prescribed and make their views known in writing within forty days from the date of issue of the letter in accordance with the Rule 6(2).

- vi) Requests were made to the Central Board of Excise and Customs (CBEC) and Director General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S), Kolkata to arrange details of imports of subject goods in India for the period of investigation and preceding three years. However, no information was provided by CBEC.
- vii) The Authority provided copies of the non-confidential version of the application to the known producers and/or exporters and the Embassies of the subject countries in accordance with Rules 6(3) supra. A copy of the non-confidential application was also made available for other interested parties, wherever requested.
- viii) Following producers/exporters/importers have filed their submission/response/information to the Designated Authority:-
 - (a) Merisol RSA (Pvt) Limited South Africa
 - (b) Mitsui Phenols Singapore Pte. Ltd. ('MPS'), Singapore
 - (c) Mitsui & Co. Ltd. ('MBK'), exporter from Singapore exporting phenol produced by Mitsui Phenols Singapore Pte. Ltd. ('MPS'), producer from Singapore

(d) Crescent Chemsol Private Limited, Mumbai

ix) M/s Shri Ram Industries Ltd. collected the copy of initiation notification but did not file any response thereafter.

x) Exporters/importers who have not provided information have been treated as non-cooperating exporters/importers.

xi) Investigation was carried out for the period starting from 1st July 2005 to 31st March 2006 (POI). However, injury examination was conducted for a period from 2002-03, 2003-04, 2004-05, 2005-06 and POI

xii) The Authority held a oral hearing on 16th January 2007 to provide an opportunity to the interested parties to present relevant information orally in accordance to Rule 6(6), which was attended by M/s. Hindustan Organic Chemicals Ltd. and SI Group (formerly known as Schenectady Herdillia Ltd.), TPM Consultants (consultants for HOCL and SI Group) advocate of exporters from Singapore and South Africa, advocate of importer, officials from High commissioner of Singapore. The parties attended the oral hearing were advised to file written submissions of the information presented orally. The interested parties were allowed to present rebuttal arguments on the views/information presented by other interested parties. Designated Authority has considered submissions received from various interested parties appropriately.

xiii) Arguments raised and information/evidence provided by various interested parties during the course of the investigation, to that extent the same are supported with evidence and considered relevant to the present investigation, have been appropriately considered by the Authority.

xiv) The Authority during the course of investigation satisfied itself as to the adequacy and accuracy of the information supplied. For that purpose, the Authority conducted on-the-spot verification of the domestic industry and producers/exporters to the extent considered relevant and necessary. Additional/ supplementary details regarding injury were sought from the domestic industry, which were also received.

xv) In accordance with Rule 16 of the Rules supra, the essential facts/basis considered for these findings have been disclosed to known interested parties and comments received on the same have been considered in Final Findings.

xvi) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties through a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties as per Rule 6(7).

xvii) Cost investigations were conducted to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the applicant so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.

xviii) Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigations, or has significantly impeded the investigation, the Authority has recorded these findings on the basis of the facts available.

xix) In compliance of decision of Supreme Court in Civil Appeal No.1294 of 2001, the normal values for subject countries have been determined.

xx) Information provided by interested parties on confidential basis were examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has granted confidentiality, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.

xxi) *** in this notification represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the AD Rules.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

C.1 VIEWS OF THE DOMESTIC INDUSTRY

5. Following issues raised by the domestic industry with regard to product under consideration and like article:

- (i) The present review investigation is a midterm investigation. The product involved in the original investigation and in the present midterm review investigation is Phenol. The product under consideration in the present midterm review is the same as has been in the original investigation.
- (ii) Phenol is an organic chemical classified under chapter 27 and chapter 29 of the customs Tariff Act. The domestic industry has submitted that duty should be recommended on both the classification.
- (iii) Phenol produced by the domestic industry and imported from the Singapore, South Africa and European Union are like product.
- (iv) Phenol is a basic organic chemical normally classified under chapter 29 of the customs Tariff Act. It is marketed in two grades Crystalline and Hydrated and in two forms – loose/bulk and packed.
- (v) There is no difference in Phenol produced by the Indian industry and Phenol exported from the subject countries. Phenol produced by the Indian industry and imported from the subject countries are comparable in term of characteristics such as physical & chemical characteristics
- (vi) Phenol is used in the manufacture of Phenol Formaldehyde Resins, Laminates, Plywood, Particle Board, Bisphenol-A, Alkyl Phenols, Pharmaceuticals, Diphenyl oxide etc.
- (vii) There is no difference in the Phenol produced by the domestic industry and imported from subject countries. Phenol produced by the domestic industry and imported from subject countries are comparable in terms of characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology (followed by most of the producers world over), functions and uses, product specifications.

pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. The consumers have used the two interchangeably. Phenol produced by the petitioners and imported from subject countries is like article.

C.2 VIEWS OF THE IMPORTERS, CONSUMERS, EXPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES

6. None of the importers, consumers, exporters and other interested parties has filed any comment or submissions with regard to product under consideration, and like articles.

C.3 EXAMINATION BY THE AUTHORITY

7. The product involved in the original investigation was Phenol. This being a Mid-term Review, therefore, the investigation covers the product covered in the original investigation. The product under consideration is Phenol originating in or exported from Singapore, South Africa and European Union. Phenol is a basic organic chemical normally classified under Chapter 29 of the Customs Tariff Act. The product is marketed in two forms – bulk and packed. Bulk sales are normally in loose form, whereas packed consignments can be of much smaller container loads and generally packed in drums. Phenol is used in Phenol Formaldehyde Resins, Laminates, Plywood, Particle Boards, Bisphenol-A, Alkyl Phenols, Pharmaceuticals, Diphenyl Oxide etc. This product is classified under Customs Tariff heading no. 2907.11 and 2707.60 as per Indian Trade Classification. The Customs and ITC HS classifications are, however, indicative only and in no way binding on the scope of the present investigation
8. Rule 2(d) of the Anti-dumping Rule specifies that like articles mean an article, which is identical and alike in all respects to the product under investigation or in the absence of such an article, another article having characteristics closely resembling those of the articles under examination.
9. The petitioner claimed that the goods produced by him are like articles to the goods originating in or exported from subject countries. The Authority notes that phenol produced by domestic industry has characteristics, which are similar to those of the phenol imported from subject countries. In view of the above the Authority holds that phenol produced by the domestic industry and those being imported from the subject countries are like articles within the meaning of the rules.

D. DOMESTIC INDUSTRY

D.1 VIEWS OF THE DOMESTIC INDUSTRY

10. Following submissions have been made by the domestic industry with regard to standing of the domestic industry.
 - i) The petition was jointly filed by M/s. Hindustan Organic Chemicals Ltd. And SI Group (formerly known as Schenectady Herdillia Ltd.). There are three companies in India who created capacity for production of Phenol namely Hindustan Organic Chemicals

Ltd., SI Group (formerly known as Schenectady Herdillia Ltd) and Neyveli Lignite. However, Neyveli Lignite has not produced/sold phenol in the last three years, as would be seen from the annual report of the company. The petitioners, therefore, constitutes domestic industry under Rule 2(b) of the Rules, 1995.

- i) Production of petitioner constitutes a major proportion in Indian Production and therefore petitioner should be treated as "domestic industry" within the meaning of the Rules.

D.2 VIEWS OF THE EXPORTER, IMPORTERS, CONSUMERS AND OTHER INTERESTED PARTIES

11. M/s. Merisol RSA (Pvt.) Limited, South Africa has raised following issues:

i) The petitioners have misunderstood the provisions applicable to anti-dumping investigation. The rules rightly provides for inclusion of domestic producers as a whole, but the same is said to be qualified only if the conditions as regards the standing and domestic industry provisions are first satisfied. In the facts of the present case, the domestic industry has failed to address these issues and the Designated Authority should rightly carry out the investigation with in the ambit of rules and jurisprudence on the issues before hand. SI Group should be excluded from the scope of domestic industry for the reason that they are importers themselves and their production is meant for captive consumption.

ii) The Designated Authority should direct the petitioners to provide *proforma* IV A of each of the company, since Herdillia need to be excluded from the scope of the domestic industry.

iii) In the facts of the present case, Herdillia is not only a captive producer but also an importer of subject goods in the said investigation and therefore, on the basis of the jurisprudence and the practice of the designated Authority, they ought to have been excluded fro being part of the domestic industry at the stage of initiation.

iv) Neyveli no longer produces Phenol. The company closed down in 2004. The fact was known to the petitioner. Nevertheless, in order to inflate he supplies in the market, they had included them as a producer in the petition.

D.3 EXAMINATION BY THE AUTHORITY

- 12 The Authority has examined the contention made by exporters in this regard as well as the evidence available on record. With regard to standing of the domestic industry, Rule 2(b) states as under:

"domestic industry" means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or

importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in which case such producers shall be deemed not to form part of domestic industry."

13. Authority notes that one petitioner SI Group (formerly known as Schenectady Herdillia Ltd.) has imported the subject goods during the POI from the subject countries. It is noted that the imports made by the company are in duty free category and in duty paid category, both substantial in volume. The company was excluded from the scope of the domestic industry in the original investigations also as they were importer of subject goods from subject countries. In view of the facts & circumstances of the present case, the Authority has considered it appropriate to exclude SI Group from the scope of Domestic Industry. The petitioners were directed to provide injury information after excluding SI Group, which was provided by them. This information was sent to other interested parties participating in the investigations and they were advised to file their comments, if any, on the revised injury information.

E. OTHER ISSUES

E.1 VIEWS OF THE DOMESTIC INDUSTRY

14. Following other issues has been raised by the domestic industry:-

- i) The Designated Authority had earlier recommended imposition of Anti Dumping Duties. After imposition of anti dumping duties, the price of crude oil increased significantly, resulting into significant increase in cost of production for all producers world over. Therefore, the reference price becomes meaningless resulting into flood of dumped imports in the Indian market by the producers and exporters from subject countries.
- ii) The provision of law contemplating a mid term review investigation clearly implies that a mid term review investigation can be initiated when there are "changed circumstances". Changed circumstances can only be considered as changes in those circumstances, which led to imposition of anti dumping duty.
- iii) Given the nature of product and volatility in the input for the production, the benchmark form of duty is not an appropriate form of duty and a review is required to be conducted in order to change the form of measures from variable to fixed quantum of duty.
- iv) Designated Authority would have called for some supplementary information from the responding exporters. However, no such responses could be seen in the public file. It implies that the no non confidential version of additional information have been filed by these exporters.

E.2 VIEWS OF THE EXPORTER, IMPORTERS, CONSUMERS AND OTHER INTERESTED PARTIES

15. Mitsui has stated that they have extended full co-operation to the authority. The Company has argued that the disclosures made by the petitioners on non-confidential basis are insufficient. They have asked for disclosure of information such as pre-initiation correspondence between the authority and the petitioners.

16. Petitioners have claimed excessive confidentiality on all the issues. Non Confidential petition filed by the petitioner does not comply with the requirements and broad disclosure parameters required of such a petition under the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Article and determination of injury) Rules 1995. The petitioners have claimed confidentiality on frivolous grounds. The claim of confidentiality is illegal, self serving and deserving of denial. The information provided is not by mean neither adequately summarized nor indexed of any sort been provided.
17. The petition filed does not appear to have been examined to ensure that the same justified initiation of mid-term review. The initiation of the investigations by the authority is beyond jurisdiction. The petition filed is not complete as of sections of application as the Performa have not been fully answered, nor necessary evidence has been provided.
18. The import data has been taken from three sources. Original data received has not been disclosed. Selective data from different sources has been relied upon.
19. Original duty was on reference price basis and the petitioners did not challenge the same in appeal.
20. Evidence and information with regard to bulk and packed imports has not been provided properly by the petitioners.
21. Information with regard to imports made by SI Group has not been disclosed. It is not clear whether these imports have been included in the import analysis.
22. Merisol RSA has raised the issue of difference in technology and production process employed by Merisol and the petitioners. In spite of this, the petitioners have calculated normal value on the basis of taking Benzene and Propylene as inputs.
23. Change in the form of duty is unjustified and unsubstantiated for the Authority to accept the same. Present investigation is a mid term review and as per practice of the Designated Authority while conducting the investigations, the form of duty if any imposed has been on the same basis as it was during original investigation. The reasons cited by the domestic industry on the issue of change in form of duty have been illogical and unsubstantiated and the Designated Authority should therefore, cautiously tread before acceding to their request on any of the grounds cited by the domestic industry.

E.3 EXAMINATION BY THE AUTHORITY

24. The petition filed was examined for sufficiency of evidence to justify the present investigations. Authority notes in this regard that under Rule 23, it would be appropriate to initiate a review investigation, if there are sufficient grounds showing need for review. The petition was filed in the form and manner prescribed by the Authority for imposition of duty. Therefore, all that the Authority was required to consider was whether there was sufficient evidence to justify a review.

25. Information provided by interested parties on confidential basis were examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has granted confidentiality, wherever warranted, and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non confidential version of the information filed on confidential basis.

26. The information provided by the applicant showed sufficient prima facie justification to initiate a mid term review investigation. On being satisfied, the Authority issued a public notice dated 14th July, 2006, initiating antidumping midterm review investigation concerning imports of the subject goods originating in or exported from Singapore, South Africa and European Union.

27. Subsequent to the initiation of the investigation, the Authority requested DGCI&S to provide import information for period of investigation and injury period which was received and being considered by the Designated Authority for injury determination.

28. Grade wise information – Authority notes that the Rules require determination of injury to the domestic industry in respect of like article. The Rules do not envisage separate assessment of injury in respect of different forms or grade of the product. Further, petitioners provided separate information with regard cost of production, selling price, profit/loss in respect of loose and packed product.

29. Change in form of duty – Authority notes that there is no legal basis to state that the form of duty can not be changed in a review investigation. The power to recommend form of duty inherently vest with DA and flows from his obligation as given in Rule 4(d) of anti dumping rules. The Designated Authority in mid-term review has to determine the dumping margin and injury as per Rule 23 read with Rule 10 and 11 of Anti-dumping Rules. Consequently, duty need to be adjusted depending upon the dumping margin determined during the MTR

30. The Authority has conducted on the spot verification of Merisol RSA and determination of normal value is being determined as per records maintained by the company as discussed in dumping section.

31. Imports by SI – Authority has excluded SI from the scope of the domestic industry and therefore any argument with regard to imports by SI is not relevant.

F. METHODOLOGY FOR CALCULATION OF DUMPING MARGIN

F.1 DUMPING DETERMINATION: NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN

European Union

Normal value for European Union

32. No exporter from the European Union has responded to the Initiation Notification. In absence of any response, the Authority has relied on the facts available as per Rule 6(8) of the Anti-dumping Rules to determine the normal value. For this purpose, the normal value has been

constructed based on the prices of major raw materials as reported in ICIS LOR Europe, consumption as per standard input output norms, utilities, conversion and other costs of the domestic industry. In addition to that reasonable profit at the rate of 5% has been added. By adopting this method, the normal value has been calculated as US \$ *** per MT for bulk and US \$ *** for packed material

Export Price for Non-cooperating Exporters

33. The Authority has taken into account transaction wise data from DGCI&S with regards to imports from EU. The Authority notes that the European Union has exported 12010 MT of phenol in bulk and 1229 MT of packed phenol. The export price has been taken from transaction-wise details of the DGCIS data. After making adjustments on account of ocean freight, overseas insurance, commission, inland freight, port expenses, bank charges, the ex-factory export price is calculated at US\$ *** per MT for bulk material and US\$ *** per MT for packed material.

South Africa

34. M/s Merisol RSA (Pty) Limited, South Africa has cooperated and provided the information. From the information it has been observed that the exporter had exported the product in packed and bulk form to India. It was also observed that exporter had made sale of both packed and bulk product in the home market as well. During the verification the exporter, explained that they are the only company in the world who is producing Phenol by coal route whereas all other companies in the world are producing Phenol from Cummins route where Benzene & Propylene are the main raw materials. Since their production route is different they further explained that the Phenol produced by them cannot be used in pharmacy Sector. However, the usage in other sectors remains same and also there is no difference in price in the Market in the Phenol produced by different routes. They admitted that the Phenol produced by Indian domestic producers and Phenol produced by them are like article.

Normal Value for South Africa

35. For this purpose, the transaction-wise data provided by the exporter have been relied upon to determine the normal value. During the POI the exporter from South Africa *** MT of bulk Phenol and ***MT packed Phenol to India. Expenses on account of inland freight and handling charges as verified during the investigation have been adjusted for calculating normal value. By this method, the normal value for bulk product has been determined as US\$ *** per MT and US\$ *** per MT for packed product.

Export price for Merisol RSA Pty Limited.

36. To determine the export price for the cooperating exporter, the transaction-wise data provided have been relied upon. Expenses on account of inland freight, handling charges, overseas freight, insurance, credit cost and commission to agents have been adjusted to determine the export price at ex-factory level. On the basis of data provided and verified, the export price has been determined US\$ *** per MT for bulk product and US\$ *** per MT for packed product.

Export Price for Non-cooperating Exporters

37. No exporter other than Merisol has responded from South Africa. For determination of export price, the Authority has relied on transaction-wise details provided by DGCIS. Adjustments on account of expenses on exports have been taken as per information provided by the cooperating exporter from South Africa. After making adjustments, the ex-factory export price is calculated as US\$***/MT for bulk material and US\$***/MT for packed material.

Singapore

38. Mitsui Phenol Singapore Pte. Ltd. (producer) and Mitsui & Co. Ltd., Singapore (exporter) have cooperated in the investigation and provided the information. Mitsui Phenol Singapore Pte. Ltd. (hereinafter referred to as 'MPS') is a private limited company incorporated under the Singapore Companies Act. MPS is an amalgamation of the erstwhile Mitsui Phenol Singapore Pte. Ltd. and Mitsui Bisphenol Singapore Pte. Ltd. (hereinafter referred to as 'MBS') w.e.f. 1st January 2006 pursuant to amalgamation agreement signed on 27th September 2005. Prior to amalgamation MPS and MBS, both were the subsidiary of Mitsui Chemical corp. Japan. Prior to amalgamation, MBS was engaged in the activity of manufacturing Bisphenol. On 1 January 2006, the company changed its name from Mitsui Phenol Singapore Pte. Ltd. to Mitsui Phenols Singapore Pte. Ltd. Further, the exporter in this case i.e. Mitsui & Co. Ltd., Singapore (hereinafter referred to as MBK) is not by itself the producer. The phenol exported to India during the period of investigation has been produced by Mitsui Phenols Singapore Pte. Ltd.. Mitsui & Co. Ltd. holds 5% of the shareholding in Mitsui Phenols. During verification, the company explained that during the period of investigation sales in the domestic market has been made to related as well as unrelated customers. To the unrelated customers the sales have been made on spot basis as well as to customers through pipeline with whom company has entered into long term contracts of 12-15 years and the prices are charged on the basis of agreed formula. The formula are based on the price of main raw material i.e. Benzene and/or prevailing prices of phenol in the Asian region. They further stated that they are selling phenol in bulk in domestic as well as in export market and do not have any sales in packed form.

Normal Value for Singapore

39. The transaction-wise information provided by the cooperating exporter has been relied upon to determine the normal value for Singapore. For determination of normal value, sales made by the exporter in the home market have been taken into account. In this case it has been contended by the exporter that only spot sales in the home market should be taken into account for determination of normal value as conditions of sales, pricing policy, position in distribution system and size of quantity of such sales are comparable with the export sales made to India. It has also been contended that the spot sales made in the home market meet the tests of (5%) sufficiency of sales and (80%-20%) sales below cost sales i.e. the spot sales qualifies as sales made 'in the ordinary course of trade'. Further it has been submitted that contract sale (sales made through pipelines) should not be considered for determination of normal value as prices charged, pricing policy, quantities, distribution system etc. of such sales are not comparable with the sales made to India. As per section 9(A)(1)(c) of the Custom Tariff Act, normal value means the comparable price 'in the ordinary course of trade' for the 'like article' in the home market of the exporter. Both spot sales and contract sales in home market qualify as sales made 'in the ordinary course of trade' as per para 2 of Annexure-1 of the Anti-dumping Rules. As per para 6(1) of Annexure 1 of

the Anti-dumping Rules, the comparison of the normal value with export sale is required to be made at the same level of trade and due allowance need to be made on merits concerning difference which affect price comparability including difference in conditions and terms of sales. As per provision of the law, only allowance need to be made in case conditions of sale are different and not to exclude sales made 'in the ordinary course of trade' if the conditions of sales are different. In view of the fact that both the contract sales and spot sales qualify as sales made in 'ordinary course of trade', therefore, the Authority finds it appropriate to take into account all sales for determination of normal value and not to exclude the contract sales because of the different conditions of such sales in the home market. In this case, if due allowance is to be made for higher volume of contract sales then the normal value would increase further. Therefore, for determination of normal value, all sales constituting spot and contract sales have been taken into account. It has also been contended that the related party transactions should be excluded to determine the normal value. The argument that all related party transactions should be excluded to determine the normal value is untenable because as per the Anti-dumping Agreement the transactions made during the ordinary course of trade are to be taken into account. The exporter nowhere has contended that the transactions were not made in the ordinary course of trade. The Annual Report of the exporter very clearly states that the transactions to related party was made in the ordinary course of business. Further, it has also been noticed that long term contract sales to related and unrelated parties were made on the basis of same formula. The actual prices however, differ depending upon the period agreed upon to by the contracting parties. In this case, no material has been provided by the exporter showing that the prices to the related customers was influenced by their relationship. The Authority, therefore, has considered related sales as sales made in the ordinary course of trade and taken the same into account for determining the normal value. The expenses claimed on account of inland, freight and handling charges by the exporter and verified during the verification have been adjusted to determine the normal value. The normal value for the bulk product has been calculated as US\$ *** per MT. The cooperating exporter has not made any packed sale, therefore, to determine the normal value for the packed product, packing charges have been added to determine normal value for the bulk product. By this method, the normal value for the packed product has been determined as US\$ ***per MT.

Export price for Mitsui Phenol Singapore Pte. Ltd. (producer) and Mitsui & Co. Ltd., Singapore (exporter)

40. The transaction-wise information provided by the exporter and importer has been relied upon. The total quantity of exports to India of bulk phenol during POI was verified as *** MT at a gross CIF price at *** per MT. Adjustments on account of ocean freight @ US \$ *** per MT, insurance @ US \$*** per MT and credit cost @ US \$ *** per MT were made to calculate the ex-factory export price. After these adjustments export price at ex-factory level was calculated as US \$ *** per MT for the bulk product.

Export Price for Non-Cooperating exporters

41. For determination of export price, the Authority has relied on transaction-wise details provided by DGCIS. Adjustments on account of expenses on exports have been taken as per information provided by the cooperating exporter from Singapore. After making adjustments, the ex-factory export price is calculated as US\$*** /MT for bulk material and US\$*** /MT for packed material.

Dumping Margin

42. On the basis of normal values and export prices determined above, the dumping margins are calculated as under:-

IN US \$ (PMT)

	Normal Value		Export Price		Weighted Dumping Margin
	Bulk	Packed	Bulk	Packed	
South Africa					
Merisol RSA (Pty.) Ltd.	***	***	***	***	*** (26.36%)
Non-cooperating Exporters	***	***	***	***	*** (68.54%)
Singapore					
Mitsui Phenol Singapore Pte. Ltd producer and Mitsui & Co. Ltd., exporter	***		***		*** (26.34%)
Non-cooperating exporters	***	***	***	***	*** (33.79%)
European Union					
Non-cooperating Exporters	***	***	***	***	*** (29.23%)

The above calculated dumping margins are more than de minimis.

G. METHODOLOGY FOR INJURY DETERMINATION AND EXAMINATION OF INJURY AND CAUSAL LINK

G.1 VIEWS OF THE DOMESTIC INDUSTRY

43. The domestic industry has submitted as under:-

- Imports of Phenol from the subject countries have increased significantly in absolute terms and relative to production and consumption in India.
- Export price from the subject countries have remained at dumped level. Further, these prices have not increased proportionate to increases in input prices
- Production, sales and capacity utilization of the domestic industry declined after showing improvements.
- Decline in Production, sales and capacity utilization is in spite of anti dumping duties earlier imposed and sub-optimal prices offered by the domestic industry.
- Profit/loss is required to be determined on the basis of market value of captive inputs in the light of Supreme Court judgment in the matter relating to Reliance Industries Ltd. vs. Designated Authority. Decision of the Authority to determine profit/loss on the basis of actual cost of production is inconsistent with the decision of the Supreme Court.

- vi. Profit before depreciation & interest, profit before interest, profit before taxes (PBDIT, PBIT, PBT), cash profits, return on investments have all shown significant deterioration after improvements upto 2004-05.
- vii. So significant has been decline in profit before depreciation & interest, profit before interest, profit before taxes that PBDIT, PBIT and PBT all became negative in the investigation period.
- viii. Market share of the domestic industry declined significantly, whereas that of imports increased.
- ix. Dumped imports have captured significant market share in demand in India.
- x. Imports from each of the subject countries have been undercutting the prices of the domestic industry in the market to a significant degree.
- xi. Imports from the subject countries have forced the domestic industry to reduce the prices steeply between 2004-05 and during investigation period. Thus, the imports were depressing the prices in this period.
- xii. Employment levels with the domestic industry have not undergone any significant change, even though there is a marginal decline. Wages paid have increased.
- xiii. Inventory level with the domestic industry increased. Increase in inventories is in spite of reduction/curtailment in production.
- xiv. Domestic industry posted negative growth in terms of both volume and price parameters, viz., decline in sales, production, capacity utilization, market share, cash flow, profits, return on investments etc. Overall, the domestic industry faced negative growth.

The various parameters relating to domestic industry collectively and cumulatively establish that the domestic industry has suffered material injury.

G.2 VIEWS OF THE EXPORTERS, IMPORTERS AND OTHER INTERESTED PARTIES

44. The exporter, importers and other interested parties has submitted as under:-

i) The Designated Authority has not examined whether the information provided is in the same form and manner as was given by International Business Information Service and Kandla Port. Information provided by DGCIS, Kandla Port and International Business Information Service cannot be claimed confidential.

ii) Information in Performa IV-A has not been indexed properly and the same does not meet the criteria laid down under WTO Agreement. Further, the indexed information was not complete.

iii) No grade wise information has been provided.

iv) Merisol RSA have disputed that there is significant increase in utility costs.

v) Reasons for claiming confidentiality with regard to volume of exports, captive consumption, demand excluding captive, net sales realization, have not given in the petition.

vi) Costing information has not been indicated.

vii) The manner of determination of cost of production and terms of various products – co-products and by-products – has not been disclosed.

viii) The petitioner has not suffered any material injury.

ix) It has been argued that exports from South Africa have declined, total imports in India have declined, market share of South Africa in total imports as also demand have declined. Installed capacity, production, capacity utilization, captive consumption, domestic sales and demand have all shown declined.

x) There is no casual link between alleged dumping and injury. Various WTO decisions have established the need for proper casual link analysis.

xi) The authority should also consider the issue of public interest as domestic industry is not able to meet the demand. Herdillia themselves are importing as well as using the phenol for captive consumption.

xii) The claim of petitioners with regard to revision of duty is unjustified.

xiii) Regarding the increased in allegedly dumped imports, it is worth mentioning that there is a limited availability of domestic industry's capacity to attend the Indian market. Besides the capacity of the domestic industry is far from the needs of the domestic market and its production of the subject goods is also destined to captive consumption and to exports. So it could not be concluded that the increase in allegedly dumped imports have affected the domestic industry, but that the incapability of the domestic industry to provide subject goods to the market was responsible for the increase in those imports.

G.3 EXAMINATION BY THE AUTHORITY

45. The Authority has considered data as per DGCIS data. The Authority notes it is not specifically pointed out in what respect the *pro forma* IVA is not indexed properly and how it is not meeting WTO agreement. In the subsequent paragraphs, the Authority has analyzed injury parameters as per Rules.

- a) Grade wise information – Authority notes that the Rules require determination of injury to the domestic industry in respect of like article. The Rules do not envisage separate assessment of injury in respect of different forms or grade of the product.
- b) Information provided by interested parties on confidential basis were examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has granted confidentiality, wherever warranted and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non confidential version of the information filed on confidential basis
- e) Cost of production – Authority notes that the cost of production adopted for the purpose of present determination is on the basis of consistent practice of the Authority.

Cumulative Assessment of Injury

46. Subject countries in the present investigation are Singapore, South Africa and European Union. Annexure II of Anti Dumping Rules provides that in case more than one country simultaneously subjected to anti-dumping investigation, the Designated Authority will cumulatively assess the effect of such imports, only when it determines that (a) the margin of dumping established in relation to the imports from each country is more than two per cent expressed as percentage of export price and the volume of the imports from each country is three per cent; the imports collectively accounts for more than seven per cent of the import of like article and (b) cumulative assessment of the effect of imports is appropriate in light of the conditions of competition between the imported article and the like domestic articles. Present investigation is a midterm review investigation initiated under Rule 23 of the Rules.

47. On examination of information, the Authority finds that the prices of the subject goods of the domestic industry are comparable to price of subject goods coming from subject countries. These have been imported under the same tariff classification. The user and user industry for the imported product and the domestic product is the same. The Authority has, therefore, found it appropriate to cumulatively assess the effect of imports of the subject goods on the domestically produced like article in the light of conditions of competition between the imported products and the conditions of competition between the imported products and domestic like product.

Volume Effect of Dumped Imports

48. With regard to volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports either in absolute terms or relative to production or consumption in India. Annexure II (ii) of the anti dumping rules provides as under:

"While examining the volume of dumped imports the said authority shall consider whether there has been significant increase in the dumped imports either in absolute terms or relative in production or consumption in India."

Assessment of demand and market share

49. Designated Authority has determined demand as the sum of domestic sales of the domestic industry, sales of other Indian producers and imports of the subject goods in India from all sources. The demand so assessed is shown in the following table.

	Unit	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	July05-Mar06	Annualized POI
Domestic Industry	Mt	42039	37583	44265	28143	23221	30961
Other Producers	Mt	30525	32329	34099	26952	18760	25013
Import from Subject country -Mid Term	Mt	9094	15928	16698	30088	22949	30598
Import from Other	Mt	12245	49497	48337	63353	50462	67282

country							
Total Demand excluding Captive	Mt	93903	135337	143399	148536	115391	153855
Trend	Indexed	100	144	153	158	123	164
Captive	Mt	3069	2761	1311	1523	1506	2008
Total Demand including Captive	Mt	96972	138098	144710	150059	116897	155863
Trend	Indexed	100	142	149	155	121	161
Market Share excluding captive							
Domestic Industry	%	44.77	27.77	30.87	18.95	20.12	20.12
Other Producers	%	32.51	23.89	23.78	18.14	16.26	16.26
Import from Subject country -Mid Term	%	9.68	11.77	11.64	20.26	19.89	19.89
Import from Other country	%	13.04	36.57	33.71	42.65	43.73	43.73
Market Share including captive							
Domestic Industry	%	43.35	27.21	30.59	18.75	19.86	19.86
Other Producers	%	34.64	25.41	24.47	18.98	17.34	17.34
Import from Subject country -Mid Term	%	9.38	11.53	11.54	20.05	19.63	19.63
Import from Other country	%	12.63	35.84	33.40	42.22	43.17	43.17

50. The Authority notes that the imports of the subject goods have significantly increased while the sales of the domestic industry and other domestic producers have declined during the injury investigation period in spite of the fact that the demand of the product shows positive trend. The market share of the domestic industry has significantly declined during this period.

Price Effect

51. With regard to the effect of the dumped imports on prices, Annexure II (ii) of the Rules lays down as follows:-

"With regard to the effect of the dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of rule 18 the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which other wise would have occurred to a significant degree."

52. In a review investigation, it is required to examine whether there has been a significant price effect by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether there is likelihood of recurrence of price effect after revocation of duty.

	2003-04	2004-05	2005-06	Loose-POI	Packed-POI
--	---------	---------	---------	-----------	------------

Landed Price Subject countries	32,508	57,319	52,323	46,584	65,413
EU	38,344	58,388	52,728	46,489	66,986
South Africa	21,758	53,300	53,572	46,343	62,780
Singapore	39,529	68,731	48,579	47,124	67,228
NSR (Rs/Mt)	***	***	***	***	***
Price Undercutting (Rs/Mt) Subject countries	***	***	***	***	***
EU	***	***	***	***	***
South Africa	***	***	***	***	***
Singapore	***	***	***	***	***
Price Undercutting (%) Subject countries	***	***	***	***	***
Non Injurious Price				***	***
Price Underselling (Rs/Mt) Subject countries				***	***
EU				***	***
South Africa				***	***
Singapore				***	***
Price Under selling (%) Subject countries				***	***

53. It is noted that the price at which material is exported from subject countries in loose form is lower than the price at which material is being sold by the India Producers. The Authority notes that in the original investigation the reference price for the purpose of levying anti dumping duties from subject countries were ranging from US \$710 to US \$778. During the Period of investigation it is noted that even CIF value is more than the reference price fixed in earlier investigation which implies that anti dumping duties were not effective. However, the goods continue to have significant price undercutting and underselling effects on the domestic industry.

Price suppression and depression

	Unit	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Cost of sales	Rs./Mt	***	***	***	***	***
Trend)	Indexed	100	101	134	135	137
Selling Price per unit	Rs./Mt	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	106	156	128	125
Average Landed value	Rs/Mt		***	***	***	***

54. The cost and price structure of the domestic industry and the landed value of imports from the subject countries show that the cost has increased by about 37% over the base year whereas the prices have increased by only 25%. The landed value of imports after showing an upward trend in the intervening period has again declined significantly.

55. The price at which material is being sold by the Indian Producers does not provide reasonable return on investment and is below non-injurious price of the domestic industry.

OTHERECONOMIC PARAMETERS RELATING TO THE DOMESTIC INDUSTRY

56. Annexure II to the Rules requires that the determination of injury shall involve an object examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of the subject goods. Further Annexure II (iv) of the Rules lays down as follows:-

"The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments."

Actual and potential Production, Capacity and Capacity Utilization, Sales

57. Information on capacity, production, capacity utilization and sales volumes of the domestic industry has been as under:-

	Unit	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	POI	POI Annual
Installed Capacity	Mt	40000	40000	40000	40000	30000	40000
Trend	Indexed	100.00	100.00	100.00	100.00		100.00
Production	Mt	***	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	94.49	114.07	67.77		81.20
Capacity Utilization	%	106	100	121	72	86	86
Trend	Indexed	100.00	94.49	114.07	67.77		81.20
Domestic Sales	Mt	***	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	89.40	105.30	66.95		73.65
Imports from Subject Countries	Mt	9094	15928	16698	30088	22949	30598
Trend	Indexed	100.00	175.15	183.61	330.86		336.47

58. It is noted that production, capacity utilization and sales of the domestic industry show negative trend during the entire injury period, at the same time, imports from subject countries have increased significantly. Production of the domestic industry has declined in response to decline in sales due to increase in imports from various sources, including the subject countries. Subject countries are exporting significant volumes of subject goods at a price, which is below the

non-injurious price of domestic industry. Decline in production has directly resulted in the decline in capacity utilization.

Cost of sales and selling price of domestic industry

	Unit	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Cost of sales	Rs./Mt	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	101	134	135	137
Selling Price per unit -	Rs./Mt	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	106	156	128	125

59. The Authority notes that while cost of sales and of the domestic industry increased during POI the selling price declined significantly after showing a positive trend up to 2004-05. Though the increase in sales price was more than the cost up to year 2004-05, thereafter the increase in selling price was not in proportion to the increase in cost. The increase in cost was mainly due to increase in inputs price of benzene and LPG, which are petro based.

Profits, return on investment and cash flow

60. Profits, return on investment and cash flow of the domestic industry has been examined as under:

	Unit	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	POI	POI Annual
Profit Before Interest & Tax	Rs./Lacs	***	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	126.47	319.62	49.50	22.83	22.83
Return on Capital Employed (NFA Basis)	%	***	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	130.40	250.83	48.64	21.89	21.89
Cash Profit	Rs./Lacs	***	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	132.94	347.74	49.53	20.29	20.29

61. The above data shows that the profitability and return on capital employed by the domestic industry has been significantly affected during the injury investigation period though the profitability and ROCE remains positive.

Employment and wages

62. It is noted that the constituent of the domestic industry is a multi product multi location company; therefore, there may not be direct effect of dumping on employment levels of the domestic industry. Status of employment levels and wages of the domestic industry has been as under:

	Unit	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	POI	POI Annual
Employment (Manpower strength)	Nos.	***	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	99.41	100.45	96.36	96.36	96.36
Wages	Rs./Lacs	***	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	108.42	126.70	130.64	135.02	135.02

63. It is evident from the above that employment level of the domestic industry have almost remained stagnant. Wages shows positive trend.

Actual and potential decline in Productivity

64. The productivity of the domestic industry is given in the following table:

	Unit	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	POI	POI Annual
Productivity per employee	Mt	***	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	95.05	113.56	70.33	84.26	84.26
Productivity per day	Mt	***	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100	94.49	114.07	67.77	81.20	81.20

65. The productivity of the domestic industry has declined during the injury period with the decline of production, which was declined due to decline in sales due to increase in imports from subject countries as also other countries.

Inventories

66. Designated Authority has examined the inventory level of the domestic industry, which is given in the following table:-

	Unit	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	POI
Average Stock	Mt	***	***	***	***	***
Trend	Indexed	100.00	359.05	510.74	480.27	280.77
Average Stock in terms of No. of D'ys' sales	Nos.	4	18	21	31	22
Trend	Indexed	100.00	401.62	485.05	717.41	508.30

67. Based on the above, it is noted that the inventory levels of the domestic industry shows increasing trend over the injury period. .

Factors affecting domestic prices

68. With regard to the effect of the dumped imports on prices, the Designated Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. In order to assess the effect of imports on the domestic market, Designated Authority analyzed import prices over the injury period. It was found that the landed value of imports per PMT, in period of investigation, is lower than the net selling price and non-injurious price of bulk phenol in respect of all subject countries. It was also found that the landed value of imports per PMT, in period of investigation, is higher than the net selling price in respect packed phenol from all subject countries and higher than non injurious price of packed phenol in respect of EU and Singapore but lower in the case of packed phenol from South Africa. Out of total imports from subject countries, the packed and bulk imports are 9% and 91% respectively. The decline in customs duty further resulted into reduction in landed price of imports. Change in cost structure if any, due to competition in the domestic industry and prices of competing substitutes have been examined for analyzing the factors other than dumped imports that might be affecting the prices in the domestic market. There is no viable substitute to this product and the prices were affected due to dumped prices.

69. Designated Authority determined the net sales realization of the domestic industry considering selling price, excluding taxes & duties, rebates, discounts and freight & transportation. Landed price of imports has been determined considering weighted average CIF import price, with 1% landing charges and applicable basic customs duty. The comparison is done between net sales realization and landed price of imports separately for bulk and packed phenol. The landed value of imports from the subject countries was lower than the net sales realization of the domestic industry for the subject goods during the POI in respect of bulk phenol thereby, undercutting the selling price of the domestic industry. The undercutting margin was 1-10%.

70. The price underselling is an important indicator of assessment of injury; thus, the Authority has worked out a non-injurious price and compared the same with the landed value to arrive at the extent of price underselling. The non-injurious price has been worked out for the domestic producer by appropriately considering the cost of production for the product under consideration during the POI. It was found that the landed value of imports of bulk phenol per PMT, in period of investigation, is lower than the non injurious price determined for the domestic industry during the period of investigation in respect of all subject countries. It was also found that the landed value of imports per PMT, in period of investigation higher than non injurious price of packed phenol in respect of EU and Singapore but lower in the case of packed phenol from South Africa. The underselling margin was 10-20%.

Growth

71. On examination of various economic parameters of the domestic industry, it is noted that various volume and price parameters of the domestic industry shows negative trend, which is in spite of anti dumping duty in force against subject countries, resultantly, growth of the domestic industry remained negative.

Ability to raise capital

72. The domestic industry has not made any capital investment after 2004-05 and during the POI.

Conclusion on Injury

73. The demand of subject goods increased by 61% (annualized) during POI as compared to base year. The domestic sale of the domestic industry during the same period declined to 73.67%. The domestic sale had increased by 5% in 2004-05 as compared to base year, however, in 2005-06 and POI the sale declined to 67% and 74% respectively. The production declined to 81% during POI as compared to base year. The capacity utilization declined to 86% during POI which was 106% in 2002-03. The average stock measured in terms of No. of days sales, the average stock increased from 4 days in 2002-03 to 22 days in POI. The market share of the domestic industry and other producers declined from 43% and 35% in 2002-03 to 20%, 17% respectively during POI. Imports from the subject countries increased from 9094 MT in 2002-03 to 30598 MT (annualized) during POI. The increase in imports and corresponding decline in sales, production, capacity utilization despite healthy growth in demand indicates injury to the domestic industry in volume terms.

74. The landed value of imports from subject countries rose in 2004-05 as compared to 2003-04. However, in 2005-06 and POI it declined significantly. The cost of sale of the domestic industry increased by 34% in 2004-05, 35% in 2005-06 and 37% in POI as compared to base year. The average selling price of the domestic industry increased by 56% in 2004-05 as compared to base year. However, the selling price declined in 2005-06 and POI as compared to 2004-05. The undercutting of the selling price by the imports from subject countries were negative in 2005-06 and increased significantly during POI. The profits show similar trend and increased by 220% in 2004-05 as compared to base year. In 2005-06 and POI the profits declined significantly. It declined to 49.50% in 2005-06 and 23% in POI as compared to base year. The return on capital employed shows similar trends. The financial performance of the company shows improvement up to 2004-05, however, in 2005-06 and POI it deteriorated significantly.

75. The selling price behavior of the domestic industry indicate that in 2005-06 with the declining landed value of the imports, the selling price was reduced despite the fact that there was no decline in cost of sales. However, in POI the landed value declined further thereby undercutting became positive putting further pressure on the selling price. The selling price declined further in 2005-06 and POI whereas there was slight increase in cost of sales during the same period.

76. The evaluation of various parameters as analysed above shows that the performance of the domestic industry improved considerably from 2002-03 to 2004-05. However, the performance deteriorated in 2005-06 and POI.

OTHER KNOWN FACTORS & CAUSAL LINK

77. During the POI, imports have taken place from subject countries of present investigation and other countries against which investigation is progress. Imports from other than these countries are at higher prices.

Contraction in demand and / or change in pattern of consumption

	Unit	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06	POI	POI Annual
Total Demand excluding captive	Mt	93903	135337	143399	148536	115391	153855
Trend	Indexed	100.00	144.12	152.71	158.18	163.84	163.84
Total Demand including captive	Mt	96972	138098	144710	150059	116897	155863
Trend	Indexed	100.00	142.41	149.23	154.74	160.73	160.73

78. It is evident from the above that demand of the product under consideration has increased significantly, decline in demand, is therefore, not a cause of injury to the domestic industry

Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

79. The subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the domestic market. The domestic industry competes among one another and at the same time competes with the landed price of the subject goods. The price of the domestic industry is determined by the landed price of subject goods. Moreover, imports from other sources have sizable presence in the Indian market.

Development of technology and export performance

80. Technology or technology related issues have not been raised by any interested party as cause of injury to the domestic industry.

Exports by the domestic industry

81. The exports of the domestic industry is only 206 MT during the POI and it constitutes less than 1% of their production.. Therefore, exports could not have affected its over all performance.

Causal Link

82. The above mentioned factors show that the injury to domestic industry was not caused by any of the other factors analysed above.

83. The Anti-dumping duty on imports of Phenol from subject country was imposed in the form of reference price. The duty became ineffective with the increase in imports price as a consequence of increase in cost of sales because of rising prices of raw materials. The imports at landed value higher than the reference price did not attract any anti dumping duty, therefore, imports had continued at dumped prices as if there was no anti-dumping duty in place. Despite growth in demand of the subject goods by 61% during POI as compared to base year, the sale of domestic industry declined to 73.65% during the same period.

84. The landed value in 2004-05 had increased by 76% as compared to 2003-04. During the same period the cost of sales in 2004-05 increased by 33%, the selling price increased by 46%, profits increased by 253%, the production increased by 20% and domestic sale increased by 17%. The capacity utilization in 2004-05 was 121%. In 2005-06, the landed value declined to 91% as compared to 2003-04. During the same period despite the increase in cost of sales of domestic industry, the selling price declined by 82%, the profit declined to 15%, the sales volume declined to 64% whereas the imports rose by 80%. The average inventory increased to 31 days. The production declined by 59% and capacity utilization declined to 72% of the total capacity. The landed value in POI further declined to 92% as compared to 2005-06. During the same period the cost of sale increased by approximately 1% whereas the selling price further declined to 91%, the profit declined to 46%.

85. The above analysis indicate that with the decline of landed value and increase in imports from the subject countries, the selling price and profits of the domestic industry declined significantly. In addition to that, the sales volume, production and capacity utilization was also impacted adversely. No factor other than the dumped imports has come to the notice of the Designated Authority causing injury to the domestic industry, establishing casual relationship between dumped imports and injury to the domestic industry.

H. LIKELIHOOD OF CONTINUANCE OR RECURRENCE OF DUMPING

86. As analysed in Section -F of this findings, the dumping from subject countries continued despite imposition of anti-dumping duty. No material has come on record indicating that dumping would cease on withdrawal of anti-dumping duty, therefore, the Authority holds that there is likelihood of continuance of dumping from the subject countries.

I. LIKELIHOOD OF CONTINUANCE OR RECURRENCE OF INJURY TO THE DOMESTIC INDUSTRY

87. As analysed in Section-G of this findings, the injury to the domestic industry continued despite imposition of anti-dumping duty on the subject goods from the subject countries. The anti-dumping duty was in the form of reference price, with the increase of cost of sales consequent to increase in prices of raw material, the landed value increased and anti-dumping duty became ineffective. In 2005-06, with the intensification of dumping from the subject countries, the performance of the domestic industry deteriorated sharply. As already analysed, with the increase in dumped imports directly impacted selling price, profits, sales volume, production and capacity utilization of the domestic industry, therefore, the Authority holds that on withdrawal of anti-dumping duty, the performance of the domestic industry would deteriorate.

J. FINAL FINDINGS

88. The Authority after considering the foregoing concludes that:

- a. Subject goods originating in or exported from subject countries have been exported to India below their normal value, resulting in dumping;
- b. The domestic industry has suffered material injury due to dumped imports;

- c. And discontinuation of anti-dumping duties on the subject goods from subject countries may result in continuance of dumping and continuance or intensification of injury to the domestic industry.

K. Indian industry's interest & other issues

89. The Authority recognizes that the imposition of anti dumping duties might affect the price levels of the product in India. However, fair competition on the Indian market will not be reduced by the anti dumping measures. On the contrary, imposition of anti dumping measures would remove the unfair advantages gained by dumping practices, would prevent the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choice to the consumers of subject goods. The Authority notes that the imposition of anti dumping measures would not restrict imports from subject countries in any way, and therefore, would not affect the availability of the product to the consumers. The consumers could still maintain two or even more sources of supply

90. The purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the Domestic Industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the Indian market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping measures would not restrict imports from the subject countries in any way, and, therefore, would not affect the availability of the products to the consumers.

L. Recommendations

91. In view of positive determination of likelihood of dumping and injury on account of imports from subject countries the Authority is of the opinion that continuation of the measure is required against imports from subject countries. However, considering the current level of dumping from subject countries and injury suffered by the domestic industry, the Authority is of the opinion that the measure in force needs to be revised. Therefore, Authority considers it necessary and recommends anti-dumping duty on imports of subject goods from subject countries in the form and manner described hereunder.

92. At present the anti-dumping duty on the subject goods from subject countries is in the form of reference price. As prices of main raw material have been fluctuating, the reference price has been proved to be ineffective in removing injury to the domestic industry. therefore, the Authority holds that the fixed duty would be appropriate form of duty to remove injury to the domestic industry.

93. Having regard to the lesser duty rule followed by the authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the margin of dumping or margin of injury whichever is lesser, so as to remove the injury to the domestic industry. The Authority recommends continuation of definitive antidumping duty, on all imports of subject goods originating in or exported from subject countries, as indicated in Col 8 of the table below.

Duty Table

Sl. No	Tariff Item	Description of Goods	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount	Unit of Measurement	Currency
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)	(9)	(10)
1.	2907.11 and 2707.60	Phenol	Singapore	Singapore	Mitsui Phenol Singapore Ltd.	M/s. Mitsui & Pte. Co. Ltd.	218.26	MT	USD
2.	Do	Do	Singapore	Singapore	Mitsui Phenol Singapore Ltd.	Any other than Pte. above	218.26	MT	USD
3.	Do	Do	Singapore	Singapore	Any other than above	Any other than above	218.26	MT	USD
4.	Do	Do	Singapore	Any country other than Singapore	Any	Any	218.26	MT	USD
5.	Do	Do	Any country other than subject countries	Singapore	Any	Any	218.26	MT	USD
6.	Do	Do	South Africa	South Africa	M/s Merisol RSA Pty. Ltd.	M/s Merisol RSA Pty. Ltd.	206	MT	USD
7.	Do	Do	South Africa	South Africa	M/s Merisol RSA Pty. Ltd.	Any other than above	206	MT	USD
8.	Do	Do	South Africa	South Africa	Any other than above	Any other than above	206	MT	USD
9.	Do	Do	South Africa	Any country other than South Africa	Any	Any	206	MT	USD
10.	Do	Do	Any country other than subject countries	South Africa	Any	Any	206	MT	USD
11.	Do	Do	European Union	European Union	Any	Any	212	MT	USD
12.	Do	Do	European Union	Any country other than European Union	Any	Any	212	MT	USD
13.	Do	Do	Any country other than subject countries	European Union	Any	Any	212	MT	USD

94. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under Sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

95. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

R. GOPALAN, Designated Authority